औषध-२

लवण

स्वामी ओमानन्द सरस्वती

❀ ओ३म् ❀

घरेलु औषध ग्रन्थमाला-२ पुष्प

घरेलु औषध-२



लवण

"सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु"

प्रभुतेरी कृपा से प्राण, जल तथा विद्या और ओषधि हमारे लिए सदा सुखदायक हों।

लेखक—

स्वामी ओमानन्द सरस्वती

प्रकाशक—
हरयाणा साहित्य संस्थान
गुरुकुल झज्जर (रोहतक)

प्रथम संस्करण
ज्येष्ठ २०३० वि०
मूल्य ५० पैसे

मुद्रक—
वेदव्रत शास्त्री
आचार्य प्रिंटिंग प्रेस
दयानन्द मठ, रोहतक



नम्र निवेदन

सामान्य मनुष्य चाहे जंगल ग्राम कसबे और बड़े नगर किसी भी स्थान में निवास करते हों, प्राय: सभी का एक ही स्वभाव है कि छोटे मोटे रोगों पर वैद्य हकीम वा डाक्टर के घर का द्वार शीघ्र ही नहीं खटखटाते। अपने घर खेत आस पड़ोस में सुगमता से जो भी घरेलु उपयोगी वस्तु मिल जाये झट उसी का उपयोग वा सेवन करते हैं। किन्तु दैनिक प्रयोग में आने वाली हल्दी, नमक धनियां, जीरा, अदरक आदि वस्तुओं के यथोचित गुणों का ज्ञान न होने से अनेक रोगों की चिकित्सा इनके द्वारा भली भांति वे नहीं कर सकते। जिन हल्दी नमक आदि का सभी लोग प्रतिदिन सेवन करते हैं उनके द्वारा अनेक रोगों की वे स्वयं चिकित्सा भी कर सकें, इसी कल्याण की भावना से "घरेलु औषध" नामक ग्रन्थमाला का द्वितीय पुष्प "लवण" आपको भेंट किया जारहा है।

इसमें सामान्य रूप से रोगों के निदान वा पहचान, चिकित्सा, उपचार, पथ्य और अपथ्य पर भी प्रकाश डाला है। आशा है प्रेमी पाठक इससे लाभ उठायेंगे।

ओमानन्द सरस्वती

विषय-सूचि



❀ लवरण ❀

आयुर्वेदशास्त्र में लवरण के अनेक भेद माने हैं। सैंधव, साम्भर, समुद्र लवरण, विड, सौवर्चल वा काला नमक आदि अनेक लवरण वा नमक के भेद हैं।

१- सैंधव

आयुर्वेदशास्त्रों में लवरण के नाम से सैंधव का ही ग्रहरण होता है। क्योंकि अनेक प्रकार के लवरणों में सैंधा नमक ही सर्वश्रेष्ठ माना जाता है और भोजन तथा औषध के रूप में इसी का प्रयोग प्राचीन-काल से चला आ रहा है। संस्कृत भाषा में सैंधव लवरण के अनेक नाम हैं।

सैंधवोऽस्त्री शीतशिवं पाणिमन्थं च सिन्धुजम्।

नाम— सैंधव, शीतशिव, पारिगमन्थ, सिन्धुज ये सैंधा लवरण के संस्कृत नाम हैं। सैंधव शब्द स्त्रीलिङ्ग में नहीं होता।

धन्वन्तरीय निघण्टु में सैंधे लवरण के नाम इस प्रकार दिये हैं—

सैंधवं सिन्धु सिन्धूत्थं नादेयं सिन्धुजं शिवम्।
शुद्धं शीतशिवं चान्यन्मणिमन्थं शिलात्मकम् ॥२५॥

अर्थात्— सैंधे लवरण के सैंधव, सिन्धु, सिन्धूत्थ, नादेय, सिन्धुज, शीतशिव, शुद्ध, शिव, मरिगमन्थ और शिलात्मक आदि दश नाम हैं।

राजनिघण्टु में सैंधव लवरण के ९ नाम माने हैं। पथ्य और शिवात्मक दो अन्य नाम अधिक दिये हैं।

भाषाभेद से नामभेद

हिन्दी सैंधा नोन, बंगला सैंधव लवण, मराठी शेवें लोण, गुजराती सिन्धा लुण, कन्नड सैंधव, तैलगू में सिन्धु उपु, फारसी नमक ए--संग, अर्बी मिलहे हिन्दी। इङ्गलिश क्लोराइड आफ सोडियम (Chloride of Sodium) लेटिन सोडि क्लोराइडम (Sodii Chloridum).

सैंधे लवण के गुण

सैंधवं लवणं स्वादु दीपनं पाचनं लघु।
स्निग्धं रुच्यं हिमं वृष्यं सूक्ष्मं नेत्र्यं त्रिदोषहृत् ॥२२३॥

भावप्रकाश निघण्टु में हरीतक्यादि वर्ग में सैंधव लवण के गुण इस प्रकार लिखे हैं:—

गुणः— सैंधा नमक स्वादिष्ट, अग्नि को प्रदीप्त करनेवाला पाचक, हल्का, स्निग्ध, रुचिकारक, शीतल, वृष्य, सूक्ष्म, नेत्रों को हितकारी और तीनों दोषों वात, पित्त और कफ के विकारों को हरनेवाला है।

सैंधा नमक एक खनिज द्रव्य है। प्राचीनकाल से इसका बहुत व्यवहार और व्यापार होने से बणिक् द्रव्य माना जाता है। यह श्वेत-सफेद कुछ लालिमायुक्त वर्ण में दिखाई देता है। कोई-कोई इसके सफेद और लाल भेदों से दो भेद मानते हैं। सफेद रंगवाले को अधिक उत्तम मानते हैं। यह खनिज है। इसकी खानें भूमि के भीतर होती हैं, यह खोदकर निकाला जाता है। यह चमकदार पत्थर के रूप में एक दर्शक पदार्थ होता है और सब प्रकार के लवणों से यह उत्तम है।

धन्वन्तरीय निघण्टु में इसके गुण इस प्रकार लिखे हैं:—

गुण:— सैन्धवं शिशिरं स्निग्धं लघु स्वादु त्रिदोषजित् ।
हृद्यं हृन्नेत्ररोगघ्नं व्रणारोचकनाशनम् ॥२३॥

सैन्धवं स्वादु चक्षुष्यं वृष्यं रोचनदीपनम् ।
अविदाहि विबन्धघ्नं सुखदं स्यात् त्रिदोषजित् ॥२७॥

अर्थ:— सैंधा लवण शीतल, चिकना, हल्का, स्वादु और तीनों दोषों को जीतनेवाला है। हृदय तथा नेत्र रोगों को दूर करनेवाला है। हृदय को शक्ति देनेवाला, फोड़े-फुन्सियों और जख्मों को भरने और ठीक करनेवाला है ॥२३॥

सैंधा नमक स्वादिष्ट, चक्षुओं को हितकर, बलदायक, रुचि-वर्धक और भोजन को पचानेवाला तथा जठराग्नि को उद्दीप्त करने वाला है। दाह विबन्ध कोष्ठबद्धता का नाशक और सुखदायक है, और तीनों दोषों को जीतनेवाला है ॥२७॥

राजनिघण्टु में सैन्धव लवण के गुण निम्न प्रकार से लिखे हैं:—

गुण:— सैन्धवं लवणं वृष्यं चक्षुष्यं रुचि-दीपनम् ।
त्रिदोषशमनं पूतं व्रणदोष-विबन्धजित् ॥३४॥

सैन्धवं द्विविधं ज्ञेयं शीतं रक्तमिति क्रमात् ।
रस-वीर्य-विपाकेषु गुणाढ्यं पूतनं शिवम् ॥३५॥

अर्थ:— सैन्धा लवण शक्ति-वर्धक, चक्षुओं के लिए हितकारी रुचिवर्धक, जठराग्नि को दीप्त करनेवाला, तीनों दोषों को शान्त करनेवाला, व्रणों को शुद्ध करनेवाला, दोषों की शुद्धि करनेवाला कोष्ठबद्धता कब्ज को जीतनेवाला है।

सैन्धा लवण के दो भेद हैं:— शीत और रक्त। रस-वीर्य विपाक में गुणकारी, पूतन शुद्धि करनेवाला और कल्याणकारी है। इसका उचित मात्रा में सेवन करने से हानि नहीं होती।

औषध तथा भोजन में प्रयुक्त होनेवाला सर्वश्रेष्ठ लवण सेंधव सैंधा नमक ही है। लवण अनेक प्रकार के और भी होते हैं, जिनका संक्षिप्त वर्णन नीचे दिया जाता है।

२- विड लवण के नाम

विडं कृत्रिमकं धूर्तं क्षारं द्रावणमासुरम्।
सुपाक्यं खण्डलवणं कृतकं चेति नामतः ॥२८॥

धन्वन्तरीय निघण्टु।

राजनिघण्टु में इस प्रकार लिखा है:—

विडं द्राविडकं खण्डं कृतं क्षारमासुरम्।
सुपाक्यं खण्डलवणं धूर्तं कृत्रिमकं दश ॥३६॥

विड वा बिड, पाक्य, कृतक, द्राविड, आसुर, कृत्रिमक, धूर्त, क्षार, द्रावण, सुपाक्य, खण्डलवण आदि विड, विरिया नमक के संस्कृत नाम हैं।

भाषाभेद से नामभेद

हिन्दी बिरिया संचर, कबीला नोन। बंगला बिट नून। मराठी वीड लोण। गुजराती वीड लूण।

विड लवण के गुण

सक्षारं दीपनं शूलहृद्रोगकफनाशनम्।
रोचनं तीक्ष्णं उष्णं च विडं वातानुलोमनम् ॥२९॥

राजनिघण्टु में पिप्पल्यादि षष्ठ वर्ग में लिखा है:—

विडं उष्णं च लवणं दीपनं वातनाशनम्।
रुच्यं चाजीर्णशूलघ्नं गुल्ममेहविनाशनम् ॥३७॥

भावप्रकाश निघण्टु में लिखा है:—

विडं सक्षारमूर्ध्वाधःकफवातानुलोमनम् ।२२७।

दीपनं लघु तीक्ष्णोष्णं रूक्षं रुच्यं व्यवायि च ।

विबन्धानाहविष्टम्भोदर्दगौरवशूलनुत् ॥ २२८ ॥

सब का भावार्थ निम्न प्रकार से है:—

विड नमक वा विरिया नमक खारे रसयुक्त कफ को ऊपर तथा वात को नीचे से अनुलोमन करनेवाला, दीपन, हल्का, तीक्ष्ण, गरम, रूक्ष, रुचिकर, व्यवायि और विबन्ध, आनाह, विष्टम्भ, उदर्द, भारीपन तथा शूल को नष्ट करनेवाला है। हृदयरोग, कफरोग का नाश करनेवाला यह विड नमक है। इसे कुछ लोग प्रसारिणी क्षार भी कहते हैं। यह लवण बहुत अधिक परिमाण में खानों से निकलता है और कृत्रिम भी बनाया जाने लगा।

३- सौवर्चल लवण—काला नमक (Black Salt

सौवर्चलं स्याद्रुचकमक्षपाकं च धातुमत् ।

रुचकं रोचनं भेदि दीपनं पाचनं परम् ॥

सस्नेहं वातनुन्नातिपित्तलं विशदं लघु ॥ २२९ ॥

सौवर्चल, रुचक, अक्षपाक, धातुमत् ये काले नमक के नाम हैं। भावप्रकाश निघण्टु में उपरोक्त नाम दिये हैं।

गुण:— काला नमक रुचिकारक, मलभेदक, दीपन, अत्यन्त पाचन, स्निग्ध, वातनाशक, साधारण पित्तकारक, विशद, हल्का है।

भाषाभेद से नामभेद

हिन्दी काला नोन, सोंचर नोन। बंगला सञ्चर लवण। गुजराती सञ्चर लून। कन्नड़ सौवर्चल। तैलगु नलुप्पु। फारसी-

नमक स्याह। अर्बी मला अस्वद। इङ्गलिश ब्लैकसाल्ट (Black Salt)। लैटिन अनक्वा सोडि क्लोराइडम (Anequa Sodi Chloridum)

धन्वन्तरीय निघण्टु में:—

अक्षम (सौवर्चल) काला नमक

अक्षं सौवर्चलं प्रोक्तं रुचकं हृद्यगन्धकम्।
तिलकं कृष्णलवणं तत्काललवणं स्मृतम्॥ ३०॥

राजनिघण्टु में भी इस प्रकार उल्लेख है:—

सौवर्चलं तु रुचकं तिलकं हृद्यगन्धकम्।
अक्षं च कृष्णलवणं रुच्यकं द्राविकं तथा॥ ३८॥

नाम:— काले नमक के संस्कृत में अक्ष, सौवर्चल, रुचक, हृद्य-गन्धक, तिलक, कृष्ण लवण, तत्काल लवण, रुच्यक और द्राविक आदि नाम हैं।

गुण:— लघु सौवर्चलं पाके वीर्योष्णं विषदं कटु।
गुल्मशूलविबन्धघ्नं हृद्यं सुरभि रोचनम्॥३१॥

राजनिघण्टु में इस प्रकार इसके गुण लिखे हैं:—

सौवर्चलं लघु क्षारं कटूष्णं गुल्मजन्तुजित्।
ऊर्ध्ववातानामशूलार्तिविबन्धारोचाञ्जयेत्॥३९॥

भावार्थ:— काला नमक हल्का, कड़ुवा, गर्म, विशद पाक में, उष्ण वीर्य, वायु गोले की पीड़ा को दूर करनेवाला, कब्ज और बन्ध को तोड़नेवाला, हृदय के लिये हितकारक, गौवों को रुचिकारक तथा रोचक है। गुल्म के जन्तुओं को समाप्त करनेवाला और अरुचि को नष्ट करनेवाला है। विपाक में उष्णवीर्य होने से वीर्य नाशक है।

४- औद्भिद (खनिज लवण)

औद्भिदं पांशुलवणं यजातं भूमितः स्वयम्।
क्षारं गुरु कटु स्निग्धं शीतलं वातनाशनम्॥२३०॥

औद्भिद और पांशुलवण ये खारे नमक के संस्कृत नाम हैं।

गुण – यह नमक खारी, भारी, कड़वा, स्निग्ध, शीतल, वातनाशक है। इसकी पोटली से इसका स्वेद करें। पसीने दिलाने से वातरोग दूर होते हैं।

धन्वन्तरीय निघण्टु में:—

औद्भिदं पांशुलवणं रोमकं वसुक वसु।
उरवरं पांसवक्षारमौर्वं सार्वगुणं तथा ॥ ३२ ॥

राजनिघण्टु में इसके नाम पिप्पल्यादि षष्ठ वर्ग में दिये हैं।

रोमकमौद्भिदमुक्तं वसुक वसु पांशुलवणमूरवरजम्।
पांसवमौरवरमैरिणमौर्वं सार्वसह रुद्रैः ॥ ४० ॥

नाम — औद्भिद, पांशुलवण, रोमक, वसुक, वसु, उरवर, पांसव क्षार, सार्वगुण, ऊरवरज, ऐरिण, और्व, सार्वसह आदि संस्कृत के नाम इस खारी नमक के हैं।

गुणः— लघु तीक्ष्णोष्णमुत्क्लेदि सूक्ष्मं वातानुलोमनम्।
सतिक्तं कटुकं क्षारं विद्याल्लवणमौद्भिदम् ॥३३॥
पांशुजं तिक्तमत्युग्रं व्यवायि कटु पाचितम् ॥

राजनिघण्टु में इस प्रकार लिखा है:—

रोमकं तीक्ष्णमत्युष्णं कटु तिक्तं च दीपनम्।
दाहशोषकरं ग्राहि पित्तकोपकरं परम् ॥४१॥

औद्भिद खारे लवण के गुण इस प्रकार से हैं:—

हल्का, अत्यन्त गर्म, पसीना लानेवाला, सूक्ष्म, वात का अनुलोमन करनेवाला, कड़वा, तीखा, दीपन करनेवाला, जलन और सूजन करनेवाला, भारी, कब्ज करनेवाला और पित्त के रोगों को बढ़ानेवाला और पित्त को परम कुपित करनेवाला है। जहां कुछ रोगों को दूर करता है, वहां अनेक रोगों की उत्पत्ति भी करनेवाला है।

इस लवण की उत्पत्ति ऊसर भूमि से होती है। क्षारयुक्त मिट्टी को लेकर जल में भिगो देते हैं। नमक का भाग जल में मिल जाता है। इसे निथार छानकर आग वा धूप में सुखा लेते हैं। नमक का कण (Cryotals) बन जाते हैं। इसी को कच नमक, कचिया वा खारा नमक कहते हैं।

५- साम्भर नमक

शाकम्भरीयं कथितं गडाख्यं रोमकं तथा।
गडाख्यं लघु वातघ्नमत्युष्णं भेदि पित्तलम्॥
तीक्ष्णोष्णं चापि सूक्ष्मं चाभिष्यन्दि कटुपाकि च ।२२।।

नामः— शाकम्भरीय रोमक वा गड ये साम्भर नमक के संस्कृत नाम हैं।

भाषाभेद से नामभेद

हिन्दी साम्भर नोन। बंगला सांभर लुण। मराठी सांभर लोण। साम्भ माठे। गुजराती सांभर लूण। कन्नड गाढलवण, सम्भर देशज। फारसी मिलहे अबकीर।

राजस्थान में सांभर भील एक खारी पानी की भील है। इसके पानी को सुखाकर यह सांभर नमक तैयार किया जाता है।

गुणः— सांभर नमक हल्का, वातविनाशक, अत्यन्त गर्म, भेदक, पित्तकारक, तीक्ष्ण, अभिष्यन्दी. आंखों के लिये लाभदायक पाक में कटु है।

इस लवण को चर्चा वा उल्लेख धन्वन्तरीय निघण्टु में नहीं है, सम्भव है उस काल में सांभर भील से लवण न बनने लगा हो। सांभर झील कभी समुद्र का भाग ही रही हो। सामुद्र लवण का उल्लेख मिलता है।

सामुद्रलवणम्

धन्वन्तरीय निघण्टुः—

सामुद्रलवणं प्राहुः क्षारं च शिशिरं तथा।
समुद्रजं सागरजं लवणोदधिसम्भवम् ॥३४॥

राजनिघण्टुः—

सामुद्रकं तु सामुद्रं समुद्रलवणं शिवम्।
वंशिरं सागरोत्थं च शिशिरं लवणाब्धिजम् ॥४२॥

भावप्रकाश निघण्टु में इस प्रकार लिखा है:—

सामुद्रं यत्तु लवणमक्षीवं वंशिरं च तत्।
समुद्रजं सागरजं लवणोदधिसम्भवम् ॥ २२५ ॥

सामुद्र लवण के संस्कृत में सामुद्र, अक्षीव, वंशिर, समुद्रज, सागरज, लवणोदधिसम्भव, सामुद्रक, शिव, शिशिर, क्षारादि सामुद्र लवण के नाम हैं।

सामुद्रलवण के गुण

सामुद्रं मधुरं पाके सतिक्तं मधुरं गुरु।
नात्युष्णं दीपनं भेदि सक्षारमविदाहि च ॥
श्लेष्मलं वातनुत्तिक्तमरूक्षं नातिशीतलम् ॥२२६॥

धन्वन्तरीय निघण्टु—

सामुद्रलवणं पाके नात्युष्णमविदाहि च।
भेदनं स्निग्धमीषच्च शूलघ्नं नातिपित्तलम् ॥३५॥

राजनिघण्टुगुण—

सामुद्रं लघु हृद्यं च पलितास्रदपित्तदम्।
विदाहि कफवातघ्नं दीपनं रुचिकृत्परम् ॥४३॥

भावार्थ—सामुद्र लवण मधुर, पाक में चटपटा और मधुर, भारी, साधारण उष्ण, अग्नि प्रदीपक, मलभेदक, खारा, दाहहीन, कफकारक, वातनाशक, कड़ुवा, थोड़ा स्निग्ध और साधारण शीतल है, पेट के शूल को दूर करता है, अधिक पित्तकारक भी नहीं है। हृदय के लिये हितकारी है और परम रुचिकारक है। कफनाशक भी कुछ लोग इसे मानते हैं।

सामुद्र लवण की निर्माणविधि—

समुद्र के जल को गढ़ों में रोकते हैं। पहले समुद्र जल लेकर एक गढ़े में लेते हैं। फिर एक दिन पश्चात् उस जल को दूसरे गढ़े में लेते हैं और इसी प्रकार तीसरे गढ़े में लेते हैं। तत्पश्चात् इन्हें सूखने देते हैं। जम कर डलियां बन जाती हैं। इस सफेद रंग के नमक को इकट्ठा करके बाजार में बेच देते हैं। इसमें कुछ औषधि डालकर शुद्ध भी कर लेते हैं। इसके स्वाद और वर्ण दोनों उत्तम हो जाते हैं। यह लवण अधिकतर समुद्र के तटों पर बनाया जाता है।

इसी प्रकार अनेक वनस्पतियों तथा बूटियों के लवण के समान क्षार भी बनाये जाते हैं।

जैसे—यवक्षार, मूलीक्षार, वासाक्षार, केलाक्षार, चणकक्षार आदि। इनका प्रयोग भी चिकित्सार्थ बहुत किया जाता है। किन्तु हम घरेलु औषध चिकित्सा में सैंधा लवणादि के द्वारा रोगों से कैसे पिण्ड छूट सकता है अधिक इसी पर विचार करना है।

सैन्धा नमक और उदर रोग

(१) मन्दाग्नि—

शास्त्रों में जठराग्नि पाचन शक्ति का ही नाम है।

यह चार प्रकार की होती है। (१) मन्दाग्नि (२) तीक्ष्ण (३) विषमाग्नि और (४) समाग्नि । पाचनशक्ति कफ से मन्द, पित्त से तीक्ष्ण, वात से विषम और तीनों के समावस्था में रहने से जठराग्नि समावस्था में रहती है।

मन्दाग्निवाले व्यक्ति को बहुत थोड़ा खाया हुआ अन्न भी बहुत ही कठिनता से पचता है। उबकाई आती हैं। मुख से लार गिरती हैं। जी घबराता है। सिर और पेट में भारीपन रहता है।

सभी उदर रोगों के लिए सैंधा लवण अमृत तुल्य है। जितने भी चूर्ण उदर रोगों के लिए बनाए जाते हैं प्रायः सभी में लवणों का प्रयोग होता है क्योंकि सैन्धव लवण में दीपन पाचन की विशेष शक्ति होती है। लवण लघु हल्का भी होता है। चरकशास्त्र में लवण रस की इस प्रकार प्रशंसा की है तथा इस प्रकार गुण बताये हैं:—

लवण रसः पाचनः क्लेदनो दीपनश्च्यावनश्छेदनो भेदनः तीक्ष्णः सरो विकास्यधःस्रंस्यवकाशकरो वातहरः स्तम्भसंघातविधमनः सर्वरसप्रत्यनीकभूत आस्यमास्रावयति कफं विष्यन्दयति………।

अर्थात्—लवण रस पाचन, गीला करनेवाला, छेदन, भेदन, रेचन, सन्धि जोड़ों के बन्धनों को खोलने वाला, कोष्ठों में रुके हुए मलों को बिना पकाये नीचे की ओर ले जानेवाला, वात और कफ को हरनेवाला, स्तम्भ, जकड़ना, बन्ध (कब्ज) दोषों के संघात का नाशक, सम्पूर्ण रसों का शत्रु है।

अर्थात्—लवण रस किसी भोजन में अधिक पड़ जाये तो किसी अन्य रस का स्वाद नहीं आता। मुख से लार और कफ

को बहाता है, मार्गों को शुद्ध करता है और शरीर के अवयवों को मृदु करता है। "रोचयति आहारं" आहार में रुचि करता है। यह लवण रस के लाभ बताए हैं। यह लवण रस अन्य सब लवणों की अपेक्षा सैन्धे लवण का सात्विक और हितकारी होता है।

आयुर्वेद शास्त्रों में "लवणं सैन्धवं प्रोक्तम्" जहां कहीं प्रयोग के लियें लवण लिखा हो वहां सैंधा लवण ही लेना चाहिये। क्योंकि सांभर नमक आदि तो ब्रह्मचर्य के लिये हानिकारक हैं।

हमारी जठराग्नि आहार विहार के दूषित होने से बिगड़ती तथा मन्द वा विषम होजाती है।

(१) सैन्धवादि चूर्ण—सैन्धा लवण, चित्रक छाल, छिलका हरड़, लवङ्ग, काली मिर्च, पीपल बड़ा, सुहागा श्वेत भुना हुवा, सौंठ, पिप्ला मूल, अजवायण सौंफ और बच सब एक एक तोला लेकर कूट छान कर इक्कीस दिन तक इसे नीम्बू के रस में खरल करें। यह चूर्ण मन्दाग्नि की अचूक औषध है। उदर रोगों की बहुत अच्छी औषध है।

मात्रा—१ मासे से ३ माशे तक उष्ण जल के साथ वा सौंफ के अर्क से सेवन करें।

(२) वायु के कारण मन्दाग्नि हो तो उपरोक्त चूर्ण को गाय की खट्टी छाछ (तक्र) के साथ सेवन करने से सोने पर सुहागे का कार्य करेगा।

(३) वर्षा ऋतु में सैंधा नमक १ तोला, हरड़ ५ तोला, कूट छानकर उष्ण जल के साथ प्रातः सायंकाल लेवें। मात्रा—६ माशे से १ तोले तक शक्ति अनुसार लेवें।

(४) भोजन से पूर्व ६ माशे अदरक सैंधा लवण लगाकर

प्रतिदिन खाने से सर्वथा बुझी हुई जठराग्नि पुनरपि उद्दीप्त हो जाती है ।

(५) सैंधा लवण ३ माशे सौंठ ३ माशे मिलाकर उष्ण जल के साथ प्रतिदिन प्रयोग करने से मन्दाग्नि रोग दूर हो जाता है ।

(६) सैंधा लवण एक पाव को सात दिन नीम्बू रस में भावना देवें तथा सात दिन अदरक के रस से भावना देवें । मात्रा- ३ माशे से ६ माशे तक प्रातः सायं तथा भोजन में शाक दाल में डालकर सेवन करने से मन्दाग्नि रोग दूर हो जाता है ।

(७) अजवायन देशी ४ तोले, सैन्धा नमक १ तोला अत्यन्त बारीक पीस लेवें । मात्रा—३ माशे, जल के साथ प्रातः सायं सेवन करने से मन्दाग्नि रोग दूर होगा ।

(८) काला नमक ३ तोले, काली मिर्च ३ तोले, पीपल बड़ा ३ तोले, सुहागा श्वेत भुना हुआ 1½ तोला, इन सब को खूब बारीक पीस लेवें और चार दिन नीम्बू के रस में खरल करें । चार चार रत्ती की गोलियां बनाकर प्रातः सायं जल से सेवन करें । इससे मन्दाग्नि दूर होकर भूख खूब बढ़ती है ।

(९) सैंधा लवण एक तोला, चित्रक छाल १ तोला, अजवायण १ तोला, सौंठ १ तोला, काली मिर्च १ तोला, सब को कूट छान लेवें । १ माशे से ३ माशे तक गाय की दही की छाछ के साथ लेने से जठराग्नि के सब रोग दूर हो जाते हैं ।

(१०) हरड़ का छिलका १ छटांक, सैंधा लवण १ छटांक कपड़ छान कर लेवें । मात्रा—३ माशे उष्ण जल के साथ लेवें, सब प्रकार की मन्दाग्नि दूर होगी ।

(११) लवणभास्कर चूर्ण मन्दाग्नि रोग की बहुत अच्छी औषध है। इसे दो तीन बार उष्ण जल, तक्र (छाछ) के साथ अथवा सौंफ के अर्क के साथ लेवें। इसका योग आगे लिखा है।

(१२) हिंग्वष्टक चूर्ण मन्दाग्नि तथा पेट के अन्य सभी रोगों की अच्छी औषध है।

हिंग्वष्टक चूर्ण का योग

सौंठ, काली मिर्च, पीपल बड़ा, सैंधा लवण, जीरा सफेद, जीरा काला, अजमोद, हीङ्ग भुनी हुई। सब को खूब बारीक पीस कर कपड़ छान कर लेवें। मात्रा—१ माशे से ३ माशे तक उष्ण जल से दिन में दो तीन बार लेवें। मन्दाग्नि अफारा शूल, अजीर्ण आदि सभी उदर रोग दूर भागते हैं।

अग्निमुख लवण

चित्रक छाल १ तोला, जमाल गोटे का मूल १ तोला, कुठ एक तोला, निसोत की जड़ १ तोला, सैंधा लवण चार तोले, सब को कपड़ छान करके तीन दिन तक थोहर के दूध में खरल करें और इस औषध को थोहर के खोखले डण्डे में भर कर बन्द करके कपरोटी कर लेवें। जंगली उपलों की अग्नि में लाल करके निकालकर मिट्टी दूर करके चूर्ण को निकालकर कपड़छान कर लेवें, यही अग्निमुख चूर्ण है।

मात्रा—एक रत्ती से दो रत्ती तक गर्म जल के साथ सेवन करें। मन्दाग्नि कोष्ठवद्धता दूर करने के लिए अद्वितीय औषध है। मेरी बार बार अनुभूत औषध है।

इसी प्रकार वृहद् अग्निमुख चूर्ण भी इस रोग की सर्वोत्तम औषध है।

लवण भास्कर चूर्ण

सैंधा नमक ८ तोले, काला नमक २० तोले, समुद्र नमक ३२ तोले, पीपल बड़ा. धनिया काला जीरा, तेजपत्र, तालीस पत्र, नाग केसर, ये सब आठ आठ तोले काली मिर्च ८० तोले, जीरा श्वेत आधा भुना हुआ ४ तोले, सौंठ ४ तोले, दारचीनी ३ तोले, दाना इलायची बड़ी दो तोले. अनारदाना ३२ तोले, अमलबेत १६ तोले, इन सब को कूट छान (बारीक पीसकर) सुरक्षित रखें। यह लवण भास्कर आयुर्वेद का प्रसिद्ध चूर्ण है। जो मन्दाग्नि आदि रोगों की तथा पाचन की उत्तम औषध है।

मात्रा—१ माशे से ३ माशे तक उष्ण जल, गौ के तक्र (छाछ) वा सौंफ के जल वा अर्क के साथ लेवें।

(२) अजीर्ण (बदहजमी)—

अधिक जल पीने, अन्धाधुन्ध भोजन करने, कभी अधिक और कभी न्यून भोजन करने, भूख, प्यास, मल, मूत्र, अपानवायु आदि के वेगों के रोकने, दिन में सोने, चिन्ता, शोक, भय और लम्बे रोगों के कारण अजीर्ण का रोग हो जाता है।

जिह्वा के चटोरों को, पशुओं के समान खाते रहने से प्रायः यह अजीर्ण का रोग होता है। जो व्यक्ति खाने में पेटू होते हैं किन्तु व्यायाम परिश्रम करते नहीं, अजीर्ण रोग उन्हीं का मित्र होता है।

अजीर्ण रोग में भूख का न लगना, भोजन में अरुचि, वमन, उबकाई आना, मुख से लार पड़ना, मूर्च्छा, गशी, व्यर्थ बकवास आदि अजीर्ण के ही उपद्रव हैं। अजीर्ण के अधिक बढ़ने से विशूचिका, हैजादि भयङ्कर रोग उत्पन्न होकर मृत्यु

के मुख में मानव चला जाता है ।

(३) आमाजीर्ण—

खाये हुये भोजन से बना रस अजीर्ण के कारण नहीं पकता तो इसे ही आम अजीर्ण कहते हैं । इसके कारण उदर और शरीर में भारीपन रहता है, आंखों और मुख पर सूजन रहता है। जिस प्रकार का भोजन खट्टा वा मीठा किया जाता है वैसी ही डकारें आती रहती हैं ।

(१) सैन्धा लवण ६ माशे, जीरा काला ३ माशे, पीपल बड़ा ३ माशे, काली मिर्च ६ माशे, सौंफ १ तोला, सब को कूट छान लेवें । मात्रा ३ माशे दिन में तीन चार बार उष्ण जल के साथ देने से आम (कच्चा) अजीर्ण दूर हो जाता है।

(२) सैंधा लवण, हींग, सौंठ, कालीमिर्च, पीपल बड़ा, सब को बारीक पीसकर थोड़ा गर्म जल डालकर लेप बना लें। इसका नाभि के ऊपर पक्वाशय पर लेप करें । इस प्रकार दिन में दो तीन बार लेप ना चाहिए । कुछ दिनों में आम अजीर्ण दूर हो जायेगा ।

(३) सैंधा लवण, दाना इलायची बड़ी, पोदीना सूखा, अजवायन देशी, मिर्च काली, सब एक तोला लेवें, कूट छानकर चूर्ण बना लेवें । यह आम अजीर्ण को दूर करने के लिए अत्यन्त लाभदायक औषध है।

(४) विदग्ध अजीर्ण—

जब पक्वाशय और यकृत् में पित्त का बाहुल्य होता है, तब यह अजीर्ण उत्पन्न होता है । इसमें प्यास अधिक लगती है, पसीने का अधिक आना, छाती में जलन, खट्टी डकारों का आना, मूर्च्छादि इसके लक्षण हैं।

चिकित्सा

(१) राजवटी—

सैंधा लवण १ तोला, सौंठ ४ तोले, गन्धक शुद्ध २ तोले, सब को अच्छी प्रकार से बारीक पीस लें । नीम्बू के रस के साथ खरल करके दो दो रत्ती की गोलियां बनायें, प्रातः सायं ताजे जल के साथ एक दो गोलियां ले लेवें । ये गोलियां विदग्ध अजीर्ण की बहुत अच्छी औषध है ।

(२) शंखवटी—१

पांचों लवण ४ तोले, इमली का क्षार ४ तोले, नीम्बू का रस ४ तोले, शंख के टुकड़े आग में गर्म करके बार बार गोमूत्र में बुझायें जब तक इसके छोटे छोटे टुकड़े न हो जायें । हींग भूनी एक तोला, सौंठ एक तोला, काली मिर्च एक तोला, पारा शुद्ध ६ माशे, गन्धक शुद्ध ६ माशे, पहले गन्धक और पारे को खरल में ६ घण्टे रगड़कर कजली बनावें और शेष सारी औषधियों को बारीक पीस कपड़छान कर कजली के साथ रगड़ें फिर इसमें ४ तोले नीम्बू का रस डालकर ४ रत्ती से १ माशे तक की गोलियां बनायें । इनमें से दिन में तीन चार गोलियां ताजे जल के साथ सेवन करें ।

(३) शंखवटी २—पारा शुद्ध २ तोले, गन्धक शुद्ध एक तोला दोनों को खरल में ६ घण्टे रगड़कर कजली बनायें । सैंधा लवण दस तोले, काला नमक दस तोले, हींग भुनी हुई दस तोले, सौहांजना की जड़ की छाल दस तोले, समुद्र नमक दस तोले, नौशादर दस तोले, सब को बारीक पीसकर कजली के साथ रगड़ कर एकरस कर लेवें । इसमें नीम्बू का रस

डालकर दो तीन दिन तक खरल करके चार चार रत्ती की गोलियां बनायें। एक वा दो गोलियां ताजे जल के साथ वा अर्क सौंफ के साथ दिन में दो तीन बार सेवन करें। यह औषध विदग्ध अजीर्ण ही नहीं बल्कि सर्व प्रकार के अजीर्ण को दूर करने की अद्वितीय औषध है।

(५) **विष्टब्धाजीर्ण**—वेग विधारण से होनेवाला अजीर्ण दैव की बद्धकोष्ठता बनी रहती है, इसी के परिणामस्वरूप अजीर्ण विष्टब्धाजीर्ण है।

लक्षण—सदैव उदर पीडा, आनाह-अफारा, शरीर की सन्धियों में पीड़ा, शरीर टूटना, अधोवायु (अपान) व मल का अवरोध होता है।

चिकित्सा—

इसमें स्वेदन क्रिया करनी चाहिये, लवण और सोये के बीज दोनों को बारीक पीस कर पोटली बना लें और तवे पर गरम करके पीड़ा के स्थान पर सेक करें, इसी प्रकार अलसी की पोटली से सेकने से भी आराम हो जाता है। एक पतीलो में पानी डालकर उसमें १६ छटांक सेंधा नमक भी डाल लें, जब उबलने लगे तो रोगी को निर्वस्त्र कर चादर उढ़ा दें और चादर के अन्दर पात्र रखकर शनैः शनैः ढक्कन हटा दें, इस प्रक्रिया से स्वेद आकर अजीर्ण दूर होजावेगा।

(२) काला नमक एक तोला, बड़ी हरड़ की छाल एक तोला, सौंठ, अजवायन एक-एक तोला, चूर्ण बनायें।

मात्रा—१-३ माशे। अनुपात उष्णोदक। दो तीन बार लेने से विष्टब्धाजीर्ण समाप्त होता है।

(३) हिंग्वष्टक चूर्ण—१-३ माशे उष्ण जल से सेवन करने

पर लाभ होता है।

(४) सब प्रकार के अजीर्णों की औषध :—

पाचक पिप्पली:—नमक सैंधा ५ तोला, नीम्बू स्वरस १ पाव, दोनों को मिलालें किसी चीनी के पात्र में रख देवें, इसमें वृहत्पिप्पली में से पिप्पली चुनकर डाल दें और चार-पांच दिन तक रखा रहने दें, पीपली पूर्ण रूप से डूबी रहे। इन्हें निकाल कर छाया में सुखाले, इनके सेवन करने से सर्वविध अजीर्ण दूर हो जाता है। सेवन दिन में तीन-चार बार करें। मात्रा १ माशे से ३ माशे तक जल के साथ लेवें।

(५) सैंधा लवण १ तोला, सौंठ, मिर्च, पीपल, नौसादर और त्रिफला सब १-१ तोला बारीक पीसकर ४—४ रत्ती की गोलियां बनालें, यह अत्युत्तम औषधि है। सर्वविध अजीर्ण, शूल, उदर पीड़ा, विशूचिका और संग्रहणी का भी नाश करती है।

(६) सैंधव, साम्भर लवण, काला नमक, लवण इन्द्रायण सब ४-४ माशे, त्रिफला १ तोला, सौंफ ४ माशे, आजवायण ६ माशे, काला जीरा ६ माशे, जीरा श्वेत आधा भुना ६ माशे, वृहत् पिप्पली ६ माशे, सुहागा श्वेत भुना हुआ ६ माशे, नौशादर ६ माशे सनाय पत्र ६ माशे, हींग शुद्ध एक माशा, सब को बारीक पीसकर नीम्बू स्वरस में खरल कर १-१ माशे की गोली भोजनोपरान्त २-३ लेने से सर्वविध अजीर्ण दूर होता है। अच्छी औषध है।

विशूचिका हैजा—

वमन, अतिसार, तृषा मूत्राभाव ये इसके विशेष लक्षण हैं। अतिसार की अपेक्षा इसमें मूत्रावरोध, मूत्र बन्द होना विशिष्ट लक्षण है।

विशूचिकान्तकवटी—

सैंधा नमक १ तोला, जीरा १ तोला, सौंठ १ तोला, काली मिर्च, पीपल, हींग भुनी हुई सब १-१ तोला, कूट पीसकर नीम्बू

के रस में खरल कर चने के बराबर गोलियाँ बनायें। दो-दो गोली गर्म जल या अर्क सौंफ के साथ १५-१५ मिनट पश्चात् दें। यह अद्वितीय औषध है। यदि रोग की सामान्य अवस्था हो तो गोली आधा व एक घन्टे पश्चात् देनी चाहिए।

(२) आक की मूल की छाल ५ तोला, सैंधा नमक दो तोला, अदरक स्वरस में एक दिन खरल कर १-१ रत्ती की गोलियाँ बनायें। आधा आधा घन्टे के पश्चात् रोगी को उष्ण जल से या सौंफ अर्क के साथ दें। यह अनुभूत योग है।

(३) लवण १ तोला, राई ५ तोला, लहशुन दो तोला, लाल मिर्च दो तोला, बारीक पीसकर नीम्बू के रस में खरल कर दो-दो रत्ती की गोलियां बनायें। रोगी को ये गोलियां आधा-आधा घन्टे या १५-१५ मिनट में उष्ण जल या अर्क सौंफ से दें। निश्चित लाभ होगा।

(४) सैंधव ३ माशे, लाल मिर्च २ तोला, १ सेर पानी में उबालकर आधा रहने पर छान लें, इसमें से २-२ तोला १५-१५ मिनट के पश्चात् पिलायें। अच्छी औषध है।

(५) गाय की दही में समान जल मिलाकर मथकर घी निकाल लें, इस छाछ में जीरा, सैंधव, काली मिर्च मिलाकर हैजे के रोगी को पिलायें। रोग की भयङ्कर दशा में अद्वितीय औषध है।

(६) विशूचिका में ऐंठन की अधिकता हो तो बालू रेत व नमक पीस व मिलाकर पोटली बनाकर कांजी छिड़ककर भफारे देवें।

(७) सरसों के तैल में सैंधा नमक और कुष्ठ कटु दोनों को मिलाकर हाथ पैर मर्दन करें, इससे शीत व ऐंठन दूर होगी।

(८) कुष्ठ कटु , सैंधव काली मिर्च और तिल का तैल मिलाकर हाथ पैरों पर मर्दन करने से भी शीघ्र ऐंठन दूर होती है। हैजे की हिचकी बन्द करने के लिए सैंधा नमक १ माशा, १ माशा घी में पीसकर सूंघने से शीघ्र हिचकी बन्द होती है।

शूल रोग

जिस रोग में नोकीले कांटे चुभने के समान पीड़ा हो उसको शूल रोग कहते हैं। यह शूल रोग आठ प्रकार का होता है।

(१) वातशूल (२) पित्तशूल (३) कफशूल (४) सन्निपात शूल (५) वातपित्तशूल (६) वातकफशूल (७) पित्तकफशूल (८) आमशूल। कच्चे रसादि के कारण होनेवाला शूल। इसके अतिरिक्त परिणाम शूल जो भोजन के पचने के पश्चात् होता है, और अन्नद्रव शूल जो भोजन पचने के पश्चात् अन्न का द्रव रस (कैलूस) बनता है तब होता है। यह प्राय: भोजन करने के दो तीन घन्टे पश्चात् होता है।

वायु के शूल में सिकाई तथा पसीना दिलाने से लाभ होता है।

(१) बालु का स्वेद:—बालु रेत और लवण दोनों को समभाग लेवें, दोनों को खूब गर्म करें तथा एक पोटली बनाकर जहां पर पीड़ा हो सेक करें। इससे सब प्रकार के शूल दूर होते हैं।

(२) हींग १ तोला, सैंधा नमक १ तोला, तिल का तैल ८ तोले, हींग और नमक को गोमूत्र में पीसकर गोला बनायें और तैल से आठ गुणा गोमूत्र लेकर सब को आग पर चढ़ादें, मन्दी आंच जलाकर पकायें। जब केवल तैल ही रह जाये तो उतार

कर बोतल में सुरक्षित रखें। इस तेल की पेट वा नाभि पर मालिश करने से वातज शूल दूर होता है।

(३) सैंधा नमक, धनियां, हींग, नौशादर, जौक्षार, अजमोद, हरड़ की छाल, वायविडंग, सौंठ, काली मिर्च, पीपल बड़ा और पोहकरमूल सब को समान भार में लेवें और सब औषधों का तीसरा भाग निसोत लेवें और सब को बारीक पीसकर चूर्ण बना लेवें। इसमें से ३ माशे से ६ माशे तक गर्म जल के साथ प्रयोग करने से सब प्रकार के शूल दूर होते हैं और आनाह (अफारा) भी दूर होता है।

(४) सैंधा नमक, अजमोद, हरड़ का छिलका, सौंठ, सब समान भार के लेवें और चूर्ण बनाकर ३ माशे से ६ माशे तक उष्ण जल के साथ लेने से सब प्रकार के शूल दूर होते हैं।

(५) काला लवण १ तोला, अम्लवेत दो तोले, जीरा सफेद दो तोले, काली मिर्च ८ तोले सब को बारीक पीसकर नीम्बू के रस में खरल करें और दो दो रत्ती की गोलियां बनायें। आवश्यकता पड़ने पर दो से चार गोलियों तक उष्ण जल के साथ लेवें, सब प्रकार के शूल दूर होते हैं।

(६) काला नमक, शंख भस्म, हींग भुनी हुई, सोंठ, काली मिर्च, पीपल बड़ा, सम भार लेकर अत्यन्त बारीक पीस लें। इसमें से ६ माशे की मात्रा उष्ण जल के साथ लेने से भयंकर पीड़ा भी तुरन्त दूर होती है।

(७) सैंधा लवण, हींग, सोये के बीज, कुठ, वच और देवदारु चूर्ण सब सम भाग लेकर सब को खूब बारीक पीस कर नीम्बू के रस में खरल करके गर्म करें और पीड़ा के स्थान पर लेप करने से आम शूल की पीड़ा दूर होती है।

(८) सैंधा लवण ५ तोले, जल से भरा हुआ नारियल लेकर चाकू से एक रुपये के समान नारियल का भाग काट लें और लवण को नारियल में डालकर नारियल का काटा हुआ वही टुकड़ा रखकर कपरोटी करके गजपुट की आग दे देवें, शीतल होने पर नारियल को निकालकर कपरोटी को दूर करें और लवण और नारियल के जले हुए गुद्दे को खूब बारीक पीस लेवें और शीशी में सुरक्षित रखें। मात्रा—१ माशा उष्ण जल के साथ लेने से परिणामशूल दूर होता है।

(९) नारियल का जल ५ सेर, सैंधा नमक २० तोले, दोनों को लोहे की कढाही में डालकर पकायें, जब केवल लवण ही शेष रह जाये तो इसे सुरक्षित रखें।

मात्रा—४ रत्ती से १ माशे तक प्रातः सायं ताजा जल के साथ प्रयोग करने से परिणामशूल नष्ट हो जाता है।

सामुद्र लवण, सैंधा लवण, काला लवण, सांभर लवण, विड लवण, यवक्षार, नौशादर, जमालघोटा मूल, मण्डूर भस्म, निसोत सफेद, जमींकन्द सब को समभार लेवें, कूटकर कपड़ छान कर लेवें। इसमें चार गुणा गोमूत्र, चार गुणा गोदधि और चार गुणा गो दुग्ध डालकर मन्दाग्नि से पकायें, जब सर्वथा सूख जाये, बारीक पीस, बोतलों में सुरक्षित रखें।

मात्रा—१॥ माशे से तीन माशे तक प्रातः सायं जल के साथ देवें। परिणामशूल की अच्छी औषध है।

उदावर्त्त रोग

यह भी उदर सम्बन्धी है। उदर का अपानवायु जो सदैव गुदा के द्वारा नीचे से निकलता है और इसी के द्वारा

अल मूत्रादि मल मूत्र के मार्ग से नीचे से ही निकलते हैं। किन्तु उदावर्त्त रोग की अवस्था में यह अपानवायु ऊपर की ओर वर्तने, जाने लगता है। और पेट की सारी व्यवस्था दूषित हो जाती है और मल मूत्र की गति भी ऊपर को हो जाती है। यह रोग तेरह प्रकार का है।

उदावर्त्त के कारण—अपान वायु, मल, मूत्र, जम्हाई, आंसू, छींक, डकार, वमन, वीर्य, भूख, प्यास, श्वास और निद्रा आदि के वेगों को रोकने से उदावर्त्त रोग होता है। जीवन चाहनेवाले व्यक्ति को इनके रोकने की कभी भूल नहीं करनी चाहिये, नहीं तो भयंकर कष्टों को सहन करना पड़ता है।

जैसे अपानवायु को रोकने से मल मूत्र रुक जाता है, पेट फूलकर कुप्पा हो जाता है। शरीर में श्रान्तता आती है, सारे शरीर में पीड़ा और वायु का प्रकोप हो जाता है। इसी प्रकार मल के वेग को रोकने से पेट में गड़बड़, पक्वाशय में अत्यन्त पीड़ा वा शूल का होना, मल का न उतरना मल-बद्धता (कब्ज) हो जाती है। खट्टे डकारों का आना, अधिक रोग के बढ़ने पर रोगी के मुख के द्वारा मल (पाखाना) निकलने लगता है। इसी प्रकार मूत्र के रोकने से मूत्राशय और मूत्र की नाली में बड़ी पीड़ा होती है। मूत्र कष्ट से उतरता है। शिर में बड़ी पीड़ा होती है। पीड़ा के कारण सारा शरीर अकड़ता है तथा पेट में (मूत्राशय) में आनाह (अफारा) हो जाता है।

जम्भाई के रोकने से ग्रीवा का अकड़ना तथा इसमें और कंठ में पीड़ा होना, आंखों नाक और कानों में अत्यन्त पीड़ा वा कष्ट होता है। आंसुवों को रोकने से शिर में भारीपन थोड़ी पीड़ा, आंखों में पीड़ा तथा बड़ा कष्टदायक प्रतिशाय

(जुकाम) हो जाता है।

छींक रोकने से मीना नाम की ग्रीवा की नाड़ी रुक जाती हैं, वा इसमें पीड़ा होती है। सिर में अत्यधिक पीड़ा आधा-शीशी (आधे सिर को पीड़ा) पक्षाघात वा लकवा हो जाता है। सब इन्द्रियां निर्बल हो जाती हैं।

डकार रोकने से कंठ रुक जाता है, हृदय-स्थान और पक्वाशय में सूई चुभोने के समान पीड़ा होती है। पेट में वायु गुडगुड करती है। जिह्वा से निरर्थक शब्द निकलते हैं, जिसे दूसरा समझ भी नहीं सकता।

वमन रोकने से शरीर में खुजली तथा शरीर पर धब्बे पड़ जाते हैं, शरीर में जलन होती है, भोजन में अरुचि और रक्त दूषित होने से सूजन कुष्ठ, पीलिया, ज्वर और रक्त सम्बन्धी रोग उत्पन्न होते हैं।

वीर्य के वेग को यदि कोई गृहस्थ संभोग करते समय रोकता है तो उसके मसाने पेड़ू गुदा अण्डकोशों में अधिक पीड़ा वा सूजन हो जाती है। मूत्र रुकने से पीड़ा तथा वीर्य की पत्थरी बन जाती है। गुर्दे में पीड़ा, धातु रोग तथा सूजन आदि भयंकर रोगों की उत्पत्ति होती है।

भूख के रोकने से तन्द्रा आलस्य अर्द्धमूर्च्छा, अङ्गों का टूटना, भोजन में अरुचि, सारे शरीर में थकावट और नेत्र-ज्योति न्यून हो जाती है।

प्यास के रोकने से गला, तालु और मुख सूख जाते हैं, प्यास अधिक रोकने से श्रवणशक्ति (सुनना) निर्बल हो जाती है। हृदय और छाती में पीड़ा होती है।

श्वास को रोकने से हृदय-स्थान और छाती में पीड़ा, अर्द्धमूर्च्छा, अज्ञानावस्था, अचेतनता और उदर में वायु का गोला हो जाता है।

निद्रा को रोकने से जम्भाई आना, अङ्गों का टूटना, सारे शरीर में, सिर और आंखों में भार-सा प्रतीत होता है। तन्द्रा मूर्च्छा होती तथा ऊंघ आती है। उदावर्त के अन्य भी कुछ कारण हैं। रूखी कषैली कड़वी चटपटी वस्तुओं के अधिक सेवन करने से उदर की अपानवायु बिगड़कर मल मूत्र, आंसू, छींक और कफ की नस नाड़ियों को रोक देती है। जिससे मल और मूत्र शुष्क हो जाता है। मलबद्धता से भी ऊपरवाले सभी उदावर्त्त के भाई बन्धु हो जाते हैं।

उदावर्त्त की असाध्यावस्था—

भयंकर प्यास हो, अत्यन्त अधिक वमन हो, रोगी अत्यन्त वृद्ध वा निर्बल हो, भयंकर उदरशूल हो, मल की वमन होती हो। ऐसी अवस्था में रोगी का बचना कठिन है।

चिकित्सा

उदावर्त्त रोग वायु के दूषित होने से होता है। अतः कुपित वायू को शान्त करने के उपाय करने चाहियें, जिससे वायु अपने मार्गों से निकलने लगे।

स्नेहपान अर्थात् घृत तैल का सेवन, स्वेदन, पसीना दिलाना, पिचकारी एनिमा करना, मल को बत्ती के द्वारा निकालना आदि, अपानवायु गुदा के द्वारा निकालना, यही सब उपाय करने चाहियें। विरेचन, पेट पर तैल मर्दन, गुदा में तेल लगाना। उष्ण जल वा तैल के टब में रोगी को बिठाना और सेक करना आदि भी

उदावर्त्त को दूर करने के साधन हैं।

चिकित्सार्थ औषध—

(१) सैंधा लवण, हींग और मधु तीनों को उचित मात्रा में मिलाकर बत्ती बनावें तथा बत्ती पर अरण्ड का तैल वा घी चुपड़ कर रोगी की गुदा में चढ़ायें। इससे मल अपानवायु के रोकने से उत्पन्न उदावर्त्त नष्ट होजायेगा।

(२) अरण्डी के तैल में थोड़ा सैंधा लवण मिलाकर पेट पर मालिश करें। उड़द के चूर्ण की नमकीन मोटी रोटी बना कर पेट पर गर्मागर्म रखें। एरण्ड के तैल से पिचकारी (एनिमा) करें। इससे मल वा अपानवायुवाला उदावर्त्त दूर होगा।

(३) काला लवण १ माशा गोक्षुरासव में मिलाकर देने से मूत्रवेग के रोकने से उत्पन्न उदावर्त्त में लाभ होगा।

(४) यवक्षार वा जौ का नमक ४ रत्ती किसी भी मूत्रल क्वाथ के साथ देने, से मूत्रवाले उदावर्त्त में लाभ होता है।

मूत्रल क्वाथः—इलायची छोटी ११ लेवें, गोखरु ३ माशे, खीरे के बीज की गिरी ३ माशे, पेठे के बीजों की गिरी ३ माशे सब को अधकुटा करके डेढ पाव जल में उबालें, आधा रहने पर छानकर इसमें चार रत्ती यवक्षार (जौ का नमक) मिलाकर देने से लाभ होता है।

डकार वेग के रोकने से उत्पन्न उदावर्त्त में कुमारी आसव २ तोले, जल दो तोले तथा काला लवण ४ रत्ती से १ माशे तक शीशे के गिलास में मिलाकर देवें तो उपरोक्त रोग नष्ट होगा। छींक के वेग को रोकने से उदावर्त्त में नस्य वा नसवार देवें।

नसवारः— नमक सैंधा १ तोला को अर्क के दूध में भिगोकर छाया में सुखा पास लें। इसको थोड़ी मात्रा में नस्य लेवें, छींक आयेगी, रोग दूर होगा।

वमनवेग के रोकनेवाले उदावर्त्त में सैंधा लवण ३ माशे, यवक्षार तीन माशे, दोनों को खूब पीसलें। गोघृत वा तिल तैल में मिलाकर सारे शरीर पर मालिश करने से बहुत लाभ होता है।

वीर्यवेग को रोकने से उदावर्त्त में दूब घास का रस १ तोला, गोदुग्ध १० तोले, शीतल जल ४० तोले सब को मिलाकर रोगी को पिलाने से यह रोग दूर होगा।

मूली-आदिघृत:—सैंधा नमक १५ तोले, मूली सूखी, अदरक, पुनर्नवामूल, शालपर्णी, पृष्ठपर्णी, कण्टकारी छोटी, कण्टकारी बड़ी, गोखरु, अमलतास का गुद्दा ये सब भी १५-१५ तोले लेकर अधकुटी करलें। इन सब को आठ सेर जल में उबालें चौथा भाग जल का रहने पर उतारकर छानलें। इसमें दो सेर गोघृत डालकर मन्दी आंच पर पकायें, जब केवल घृत रह जाये उसे छानकर शीशा वा चीनी के पात्र में रखें।

मात्रा—१ तोला प्रातः सायं गाय के उष्ण दूध में मिला कर पीने से सर्व प्रकार का उदावर्त्त नष्ट होगा। सैंधा लवण १ तोला, यवक्षार १ तोला, निशोत, हरड़ का छिलका १ तोला, चित्रक छाल १ तोला, अम्लवेत १ तोला, हींग भुनी हुई १ तोला, सब को कपड़छान करलें। इसमें थोड़ासा गोघृत भी मिलालें तो सोने पर सुहागे का काम करेगा।

मात्रा—३ माशे से ६ माशे तक उष्ण जल से लेवें, उदावर्त्त, अफारा, शूल, गोला सब दूर होंगे।

लेप—करंजवे की मूल का छिलका, करंजवे वृक्ष की छाल, करंजवे के बीज, सैंधा लवण सब समभाग, इन्हें गोमूत्र में मिलाकर खूब बारीक पीसलें और पेट पर गर्म करके

लेप करें। उदावर्त्त, शूल, गोला, अफारा, दूर होगा।

आनाह रोग (अफारा)

आनाह-अफारा जिस रोग में आम कच्चा भोजन, रस मल सब पेट में इकट्ठे होकर दूषित वायु से सूख जाते हैं और मल तथा अपानवायु रुक जाता है इसी को आनाह पेटफूल अफारा कहते हैं।

पिचकारी वा वर्ति (बत्तो) के द्वारा अपानवायु वा मल निकालना चाहिए।

बत्ती :- काला लवण, सौंठ काली मिर्च, पीपल बड़ा, नृसार (नौशादर) रसोई का धुवां और हींग तीन तीन माशे लेवें और आग पर पकायें। खूब गाढ़ा होजाए तो इसकी पतली अंगुली के समान वत्तिश्रां बनायें तथा आवश्यकता पड़ने पर रोगी की गुदा में थोड़ा तैल वा घृत लगाकर चढ़ायें। इससे मल और अपान निकलने से आनाह अफारा दूर होगा। पकाने से पूर्व सभी औषध कूट छानकर बहुत बारीक कर लेवें।

गुल्म-गोले का रोग

हृदय पक्वाशय और नाभि के स्थानों में वायु के कुपित होने से गोला वा गुल्म उत्पन्न होता है।

गोले के कारण:—

पहिले किया हुआ भोजन पचा नहीं, उसके पूर्व भोजन कर लिया जावे, विपरीत वा अभक्ष्य पदार्थों के खाने से, कुसमय खाने से, मिथ्या आहार विहार से, अपने से बलिष्ठ से मलयुद्ध करने से, वात, पित्त, कफ और रक्त ये सब दूषित होकर हृदय से लेकर मूत्राशय तक गांठों के समान गोला सा उत्पन्न करते हैं। यही गुल्म या

गोले का रोग है ।

वात, पित्त, कफादि की दृष्टि से यह पाँच प्रकार का होता है। सब गोलों में वायु अवश्य कुपित होता है । अतः चिकित्सा करते समय वायु की चिकित्सा का अवश्य ध्यान रखें।

प्रत्येक प्रकार के गुल्म रोगी को प्रायः कोष्ठबद्धता और आनाह की शिकायत रहती है अतः कब्ज को दूर करना चाहिए। उपरोक्त शिकायतों को दूर करने के लिए गाय के गर्म दूध में अदरक का रस १ तोला डालकर पिलाने से लाभ होता है। गर्म पानी की बोतल से पेट को सेकने से लाभ होता है। प्रथम गुल्म रोगी को गोघृत वा एरण्ड का तैल खिला पिलाकर स्नेहन कराके हल्का विरेचन देना चाहिए ।

औषध

पञ्चगव्यघृत के सेवन कराने से स्नेहन तथा हल्का विरेचन दोनों ही कार्य सिद्ध होंगे।

सब गुल्म रोगों की औषध

(१) हिंग्वादि चूर्ण—

सैंधा नमक, सांभर नमक काला नमक, सामुद्र नमक, सौंठ काली मिर्च, पीपल बड़ा, यव क्षार, सज्जीक्षार नौशादर, अनारदाना पोहकरमूल, अम्लवेत, हाऊबेर, जीरा सफेद, हींग भुनी हुई, पिप्पला मूल, धनियाँ, जीरा काला, वर्च, चोया, पाढ़ा, कचूर, सिमाकदाना, ये सब एक एक तोला लेवें। इनको कूटकर कपड़-छान करके निम्बू तथा अदरक के रस में तीन दिन तक खरल करें और एक एक माशे की गोलियां बनायें। दो से चार गोलियां तक प्रतिदिन उष्ण जल के साथ सेवन करने से रक्त गुल्म का नाश हो जाता है और यह औषध सब प्रकार के गोले के लिये अनुपम

औषध है।

२–हिंग्वादि चूर्ण २–हींग भुनी हुई १ तोला, वच २ तोले, काला नमक ३ तोले, सौंठ ४ तोले, काला जीरा ५ तोले, हरड़ का छिलका ६ तोले, कुठ कड़वा ५ तोले, सब को कूटकर कपड़छान कर लें।

मात्रा—१ माशे से ३ माशे तक गर्म जल के साथ कुछ दिन सेवन करने से सब प्रकार के गोले दूर होते हैं। अनुभूत योग है।

(३) लवण काला १ माशा, घीकुंवार का रस २ तोले प्रति दिन प्रयोग करने से रक्त गुल्म दूर होता है।

(४) कुमार्यासत्र से भी सभी प्रकार के गोले दूर होते हैं।

(५) वज्रक्षार चूर्ण से भी सब प्रकार के गोले नष्ट हो जाते हैं।

प्लीहा वा तिल्ली

मनुष्य के बाईं ओर पेट में तिल्ली होती है। स्वस्थावस्था में इसकी लम्बाई पांच इंच और चौड़ाई ३ से ४ इंच और मोटाई १ से डेढ़ इंच तक होती है। इसका भार १५ से २० तोले तक होता है। वृद्धावस्था में यह घट जाती है। विषमज्वर मलेरिया के बहुत दिन आने से वा अनूपदेश में रहने से यह प्रायः बढ़ जाती है। यहां तक कि यह बढ़कर कई पौण्ड भार बढ़कर सारे ही पेट को रोक लेती है, ऐसी अवस्था में मनुष्य बहुत ही कुरूप हो जाता है।

प्लीहा का कार्यः—

हम जो भोजन करते हैं पहले उस का पच कर रस (कैलूस) जो प्रथम धातु है वह बनती है। पित्ताशय अर्थात् पित्त मैं से

गुजर कर यकृत् (जिगर) से प्लीहा (तिल्ली) में जाकर दूसरी धातु रक्त (खून) का रूप धारण करता है। रक्त को उत्पन्न करने वाली रक्त को बहाने वाली शिरा यानी नस नाड़ियों का मूल व जड़ ऋषियों ने आयुर्वेद शास्त्रों में केवल तिल्ली को माना है।

तिल्ली बढ़ने के कारण:—

बाईं पसलियों के नीचे रहनेवाली तिल्ली ज्वरों के पश्चात् प्राय: बढ़ जाती है। इसके लक्षण निम्नलिखित हैं: –

रोगी को भोजन अच्छी प्रकार नहीं पचता। हल्का सा ज्वर रहता है। मन्दाग्नि अजीर्ण होकर रोगी निर्बल हो जाता है, शरीर का रंग पीला हो जाता है। जब तिल्ली बहुत अधिक बढ़ जाती है तो प्राय: नाक और दांतों से रक्त आने लगता है। रक्त की वमन आती है। मसूढों में जख्म हो जाते हैं। पैरों, आंखों, मुख तक सारे शरीर पर सूजन (शोथ) हो जाता है। किसी-किसी को रक्तातिसार भी हो जाते हैं। अन्त में पाण्डु रोग कामला और जलोदर आदि रोग रोगी को घेर लेते हैं।

तिल्ली और यकृत् दोषों से दो प्रकार का ज्वर चढ़ा रहता है। एक तो शीत लगकर चढ़ता है और पांच छः घण्टे के पश्चात् उतर जाता है। दूसरा ज्वर हर समय चढ़ा रहता है। विशेष रूप से भोजन के पचने पर चढ़ जाता है। प्रात:काल कुछ न्यून हो जाता है। यह ज्वर बहुत लम्बे समय तक बना रहता है। रोगी बहुत निर्बल हो जाता है और किसी-किसी को तिल्ली के कारण खांसी भी रहती है।

चिकित्सा

(१) तिल्ली के रोगी को मलबद्धता (कब्ज) नहीं होनी

चाहिए। आरम्भ में हल्का विरेचन (जुलाब) देना चाहिये। यदि रोग पुराना हो तो विरेचन भूलकर भी नहीं देना चाहिये। क्योंकि बहुत से रोग=जलोदरादि होने की सम्भावना रहती है।

२—तिल्ली के रोगी को ज्वर हो तो ज्वर की चिकित्सा भी साथ ही होनी चाहिये। यदि दस्त, अतिसार, पाण्डु आदि रोग हों तो इनकी भी चिकित्सा करनी चाहिये यदि तिल्ली के स्थान पर पीड़ा हो तो उस पर वायुनाशक लेप करना चाहिए।

औषध

३—बड़ी हरड़ का छिलका १ छटांक, काला नमक १ छटांक दोनों को कूट छान लें। मात्रा—३ माशे से ६ माशे गर्म जल से लेवें। इससे तिल्ली में लाभ होगा।

सैंधा लवण बारीक पीसलें, थोड़ा जल मिलाकर आक के पके हुए पीले रंग के पत्तों पर लेप करके धूप में सुखायें। सूख जाने पर मिट्टी की एक हांडी में भर दें और ढक्कन लगाकर कपरोटी करके सुखायें और गजपुट की आग में फूंक देवें। बिल्कुल ठंडा होने पर निकाल लेवें। लवण और जले हुए पत्तों की राख को भली भांति पीसकर सुरक्षित रखें।

मात्रा—४ रत्ती से २ माशे तक उष्ण जल से सेवन करने से सर्व प्रकार की तिल्ली विशेष रूप से कफ से बढ़ी हुई तिल्ली सर्वथा ठीक होजाती है।

५—सैंधा लवण ५ तोले, शंख भस्म १ तोला, सरफोके की जड़ का चूर्ण ६ तोले सब को बारीक पीसलें।

मात्रा—४ माशे गाय की छाछ (तक्र) के साथ सेवन करने से कुछ ही दिन में बढ़ी हुई तिल्ली ठीक हो जाती है। सर्वोत्तम औषध है।

६—पाँचों लवण समभाग लेकर आध सेर लेवें और थोहर के दूध के साथ सात दिन तक खरल करें और सुखाकर एक थोहर के पके हुए दंडे में पेट चीरकर इस लवण को इस में भर देवें और इस को मिट्टी की हांडी में बन्द कर कपरोटी कर सुखाकर गजपुट की आग में फूंक देवें । इसको निकालकर सुरक्षित रखें ।

मात्र—४ रत्ती से एक माशे तक गर्म जल के साथ प्रातः सायं देवें । यह तिल्ली की उत्तम औषध है ।

७—सैंधा नमक २० तोले हल्दी २० तोले घृतकुमारी का रस १ सेर इन तीनों को मिलाकर एक बड़ी बोतल में भरकर एक सप्ताह धूप में रखं । फिर इसे निथारकर छानलें और शीशियों में रखें ।

मात्रा—६ माशे समान जल मिलाकर भोजन के पीछें देवें । इससे तिल्ली ठीक हो जाती है ।

८—सैंधा लवण ४ तोले, शंख भस्म ४ तोले, सीप भस्म ४ तोले, शुद्ध आंवलासार गंधक ४ तोले, सौंठ चूर्ण ४ तोले, पीपल बड़ा चूर्ण ४ तोले, अजवायन देशी ४ तोले, चित्रक मूल की छाल ४ तोले सब को कपड़छान करके नींबू के १ सेर रस में मिलाकर बोतलों में भर बन्द कर भूमि में गाड़ देवें । १५ दिन पश्चात् निकाल कर सुरक्षित रखें ।

मात्रा—३ वा ४ माशे दिन में दो-तीन बार भोजन के पीछे सेवन करें । तिल्ली का रोग ठीक हो जायेगा ।

९ वज्रक्षार—सैंधा लवण, काला लवण, समुद्र लवण, सांभर लवण, यवक्षार, सुहागा सफेद भुना हुआ, इन सब को

सलतोल लेकर बारीक पीसलें और खरल में आक के दूध के साथ तीन दिन रगड़कर भावना दें, फिर तीन दिन थोहर के दूध में खरल करें और इसे सुखालें। और जितना यह चूर्ण हो उतने ही तोल में आक के पके हुए पीले पत्ते लेवें। पत्तों को हांडी में बिछाकर ऊपरवाले चूर्ण को भी पत्तों पर थोडा थोड़ा फैलावें। उनके ऊपर फिर पीले पत्ते फैला देवें और चूर्ण उनके ऊपर डालें, इस प्रकार हांडी को भरकर गजपुट की आग में फूंक देवें। ठण्डा होने पर कपड़छान करलें और नीचे वाले चूर्ण के साथ मिलाकर प्रयोग करें।

चूर्ण—सौंठ, काली मिर्च, पीपल वड़ा. वायविडंग, राई, हरड़ का छिलका, आंवला, बेहड़े का छिलका, चोया वा पिप्पला मूल, हींग भुनी हुई सब को समभाग लेकर कूट छानकर चूर्ण बनायें। इस में से ३ माशे चूर्ण, ऊपर का वज्रक्षार २ माशे दोनों को मिलाकर गर्म जलके साथ सेवन करने से तिल्ली का रोग सर्वथा ठीक हो जायेगा।

१०—लवण तृतीयादि चूर्ण और अभयालवण, कुमारी-आसव, रोहितारिष्ट आदि औषध तिल्ली के रोगों को दूर करने के लिए अच्छे लाभप्रद हैं।

यकृत् रोग

जिन कारणों से तिल्ली में दोष वा विकार आते हैं, उन्हीं से यकृत् के रोग होते हैं। इस के अतिरिक्त अर्श के रक्त के बन्द होने, मद्यपान करने, अधिक मीठा खाने से यकृत् बढ़ जाता है वा सुकड़ जाता है। बढ़ा हुआ यकृत् छूने से प्रतीत होता है। उसमें पीड़ा होती है। कब्ज हो जाता है। कीचड़ के समान मल थोड़ा थोड़ा निकलता है। खांसी भी हो जाती है। रक्त कम बनता है तथा कच्चा कफ बनता है। शरीर

के दाहिनी ओर के अंगों में पीड़ा होती है। ज्वर चढ़ा रहता है। बहुत अधिक यकृत् के बढ़ने पर दाहिनी करवट रोगी सो भी नहीं सकता। अधिक समय यकृत् रोग के रहने से कामला पाण्डु रोग सूजन आदि घेर लेते हैं।

चिकित्सा

तिल्ली के समान ही यकृत् की चिकित्सा करनी चाहिए। सर्वप्रथम कोष्ठबद्धता (कब्ज) दूर करनी चाहिए।

क्योंकि यकृत् और तिल्ली के रोगों में कब्ज बहुत ही हानि का कारण होता है। जितनी औषध तिल्ली के लिए लिखी है, वे सब ही यकृत् के लिए प्रयोग कर सकते हैं। देश, काल तथा रोगी का ध्यान करके परिवर्तन और परिवर्धन करना वैद्य का कार्य है।

(१) यदि यकृत् बहुत बढ़ गया हो और इसमें पीड़ा रहती हो तो तारपीन के तैल की मालिश करके गर्म पानी से सेकने से बहुत ही लाभ होता है।

अथवा—गोमूत्र को उष्ण करके इसमें रूई का फोहा वा फुलालीन का वस्त्र भिगोकर बार बार यकृत् के स्थान पर रखें।

(२) राई में थोड़ा सेंधा लवण पीसकर केवल पांच मिनट यकृत् के स्थान पर लेप करें, फिर धो डालें और इस स्थान पर घी चुपड़ दें तो पीड़ा कुछ शान्त होगी।

(३) लाल रुहीड़े का छिलका २ तोले को अधकुटा करके डेढ पांव जल में उबालें, चोथा भाग रहने पर खूब मल छान लेवें। फिर इसके साथ समुद्र झाग ४ रत्ती, समुद्र लवण ४ रत्ती, दोनों मिलाकर पिलायें तो सब यकृत दोष दूर होंगे।

(४) घृतकुमारी का रस ६ माशे, सैंधा लवण ६ रत्ती, समुद्र लवण मिलाकर देने से कुछ दिनों में सब यकृत् दोष दूर होंगे ।

विशेष सावधानी

यदि यकृत् में पित्त की अधिकता के कारण अधिक दाह जलन आदि हो तो गर्म और खारी नमकीन औषधों का प्रयोग कभी भूलकर भी नहीं करना चाहिए । क्योंकि ऐसी अवस्था में यकृत् और भी बढ़ जाता है । लाभ के स्थान पर हानि ही होती है। पित्त बाहुल्य की अवस्था में निम्नलिखित औषधों का प्रयोग करें ।

(५) त्रिफला दो तोले थोड़ा कूटकर डेढ पाव जल में उबालें, जब जलकर चतुर्थ भाग रह जाये तो मल छानलें, ठण्डा होने पर ६ माशे मधु मिलाकर रोगी को सेवन करायें, इस से पित्त के कारण यकृत् विकार सब दूर होते हैं ।

(६) यकृत् के लिए रोहितारिष्ट का सेवन करायें । सभी उदर रोगों के लिए यह अचूक औषध है । इसका सेवन कामला पाण्डु रोग और बवासीर को भी दूर करता है ।

अश्मरी वा पत्थरी रोग

जब मूत्र की नाली में आते हुये वीर्य के साथ वायु मिल कर वीर्य और मूत्र को शुष्क कर देता है तो शुक्राश्मरी अर्थात् वीर्य के पत्थर की उत्पत्ति होती है । इसी प्रकार वायु पित्त के साथ मिलकर कफ को सुखा देता है तो पत्थरी बन जाती है । दूसरे शब्दों में कहें तो कफ और पित्त वायु के साथ मिलकर शुष्क हो (सूख) जाते हैं और वहीं पत्थरी का रूप धारण कर लेते हैं । इसी का नाम अश्मरी वा पत्थरी रोग

है। जिस प्रकार गौ के पित्ताशय के भीतर गोरोचन बढ़ता है, इसी प्रकार मनुष्य के शरीर में पत्थरी बढ़ती है।

पत्थरी के लक्षण

पत्थरी की उत्पत्ति के पूर्व तथा पश्चात् निम्न लक्षण प्रकट होते हैं। पेट में अफारा रहता है। मसाने और गुर्दे में बहुत अधिक पीड़ा रहती है। मूत्र में बकरे के मूत्र के समान दुर्गन्ध आती है। मूत्र बहुत कष्ट से आता है। ज्वर चढ़ जाता है। भोजन में अरुचि हो जाती है। पेट का स्थान फूला हुआ प्रतीत होता है।

पत्थरी वात, पित्त, कफ और वीर्य के कारण उत्पन्न होने से चार प्रकार की है।

चिकित्सा

इस रोग का पता लगते ही तुरन्त चिकित्सा करनी चाहिए नहीं तो यह पुराना होने पर बड़ा कष्ट देता है और फिर शल्य क्रिया (आपरेशन) से ही यह ठीक होगा।

पत्थरी को तोड़कर निकालने के लिए वनस्पतियों के लवणों (क्षारों) का प्रयोग किया जाता है। जैसे यव, मूली, वरुण, पाषाणभेद, अपामार्ग, अरणी और सुहांजना के क्षार तथा सुहागा और बेरपत्थर की भस्म ये सब क्षार वा लवण ही हैं जिनके सेवन से इस रोग में बहुत ही लाभ होता है। यवक्षार सबसे अधिक उपयोगी है।

(१) यवक्षार ३ माशे, बेरपत्थर की भस्म १ माशा, गुड़ ६ माशे इन को मिलाकर कांजी के साथ देने से पत्थरी रोग समाप्त हो जाता है। दिन में दो तीन बार देवें।

(२) यवक्षार ३ माशे, हल्दी चूर्ण २ माशे, गुड़ ६ माशे, तीनों को मिलालें, कांजी के साथ दिन में दो तीन बार प्रयोग करें, रोग दूर होगा।

(३) कुल्थी ढाई तोले, गोखरु ६ माशे, खरखूजे का छिलका २ तोले, तीनों को तीन पात्र जल में उबालें। तीन छटांक रहने पर खूब मल छान लें फिर इसमें यवक्षार २ माशे मिलाकर कुछ दिन रोगी को देते रहें। पत्थरी का रोग समाप्त होगा।

(४) पेठे का जल १० तोले में ३ माशे यवक्षार और पुराणा गुड तीन माशे मिलाकर कुछ दिन पिलाने से सर्वप्रकार की पत्थरी नष्ट हो जाती है।

(५) सौंठ, वरुण की छाल, गोखरु पाषाणभेद और ब्राह्मी सब को मिला, दो तोले लेवें और अर्द्ध कुटी करके डेढ छटांक पानी में उबालें। डेढ छटांक रहने पर छानलें फिर इसमें ३ माशे यवक्षार और २ माशे पुराणा गुड़ मिलाकर रोगी को देवें तो पत्थरी समाप्त होगी।

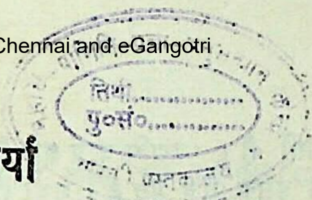
वरुण तैल– वरुण की छाल, पत्ते, मूल और फल तथा गोखरु प्रत्येक आधा सेर सब को कूटकर १६ गुणे जल में उबालें, चौथा भाग रहने पर आग पर से उतारकर छान लेंवे। इसमें १ सेर तिलों का तेल डालकर कलीवाले पात्र व साफ कढ़ाई में पकायें, जब जल जल जावे केवल तैल रह जावे उसको निथार छान शीशी में रखें। इस तैल की पिचकारी मूत्रेन्द्रिय के छिद्र के द्वारा करें। पत्थरी तथा इसके सब कष्ट दूर होंगे।

शुंठ्यादि क्वाथः– सूंठ, अरणी, पाषाणभेद, सुहांजने की छाल, वरुण की छाल, गोखरु, हरड़ का छिलका, अमलतास का गुद्दा प्रत्येक ३ माशे, सब को कूटकर डेढ़ पाव जल में उबालें।

चौथा भाग रहने पर मलकर छानलें और इसमें यवक्षार ३ माशे, हींग भुनी हुई दो रत्ती मिलाकर रोगी को देवें। इससे वातज अश्मरी (पत्थरी) मूत्रकृच्छ्र मूत्राघात तथा वायु की पीड़ा भी दूर होगी।

पाठक पढ़कर विचार करेंगे कि यवक्षार का प्रयोग पत्थरी में अधिक कराया जाता है। एक बार आर्यसमाज के एक नेता को पत्थरी का रोग था। वे एक बहुत बड़े हस्पताल में थे। मैं मिलने गया तो पूछा क्या चिकित्सा हो रही है। वे कहने लगे कि डाक्टरों के पास इस पत्थरी की कोई औषध नहीं। जौ का पानी पिलाते हैं तथा जौ का ही दलिया खिलाते हैं। जौ की शराब पीने को कहते हैं, वह अभक्ष्य होने से मैं पीता नहीं। मैंने वहीं उनके चिकित्सक को बुलवाया और यवक्षार, बेरपत्थर की भस्म, मूलीक्षार देने को कहा और उसी समय मंगवाये। डाक्टर ने आश्चर्य किया कि जौ मूली के भी लवण क्षार होते हैं। उसके अज्ञान पर मुझे दुःख हुआ। यवक्षारादि के सेवन करने से उनको लाभ हुआ और वे घर चले आये।

प्राचीन काल में हमारे पूर्वज सबसे सात्विक अन्न जौ का सबसे अधिक प्रयोग करते थे। रोटी, दलिया, राबड़ी सभी जौ की खाते थे अतः किसी को पत्थरी होती ही नहीं थी, यदि होती तो जौ का सेवन उसे निकाल देता था। गौवों का भी सबसे अधिक प्रिय भोजन हरे जौवों का प्रयोग कराते थे (उनके, दूध, घी, तक्र और दही सभी में यव खाने से उचित मात्रा में यवक्षार मिलता रहता है। जिसका सेवन पत्थरी के विकार को उत्पत्ति से पूर्व ही नष्ट कर डालता था। अतः जौ और जौ का नमक वा क्षार पत्थरी की उत्तम औषध है।



वात व्याधियां

सेंधव लवण को त्रिदोषनाशक लिखा है अतः यथोचित प्रयोग से यह वायु के रोगों का भी दूर करता है। प्रत्येक दोष के कुपित होने से रोगों की उत्पत्ति होती है, किन्तु वात की प्रधानता सबने मानी है।

पित्तं पंगुः कफः पंगुः पंगवः मलधातवः।
वायुना यत्र नीयन्ते तत्र गच्छन्ति मेघवत् ॥

पित्त और कफ तथा सब धातुवें लंगड़ी हैं। यह वायु ही है कि इनको जहां चाहे धकेलकर लेजाय, जैसे वायु मेघों को जिधर चाहे लिये फिरती है। अर्थात् वायु पित्त और कफ से बलवान् है, यही बहुत से रोगों का कारण है।

वायुरोगों के कारण

रूखी, शुष्क तथा शीतल वस्तुओं के अधिक प्रयोग से, कम खाने से, कड़वी, कषैली, चरचरी वस्तुओं के अधिक प्रयोग से, वीर्यनाश से, पूर्व की वायु लगने से, अधिक जागने से, जल में अधिक समय तक तैरने से, चोट लगने से, अधिक परिश्रम वा अधिक व्यायाम से, शीत लगने से, उपवास करने वा भूखा रहने से, भय से, शोक से, अधिक रक्त निकलने से, लम्बी बीमारी से और ऊंट, घोड़े आदि तेज सवारी से वातव्याधियां उत्पन्न होती हैं।

वातकोप का समय

विशेष रूप से वर्षा ऋतु में, दिन और रात्रि के तीसरे भाग में, भोजन पचने पर और वसन्त ऋतु में वातव्याधियां उत्पन्न

होती हैं। यद्यपि वायु एक है किन्तु स्थान तथा कार्य की दृष्टि से इसके पांच भेद हैं। यथा (१) प्राण (२) अपान (३) समान (४) उदान (५) व्यान। इनके दूषित होने पर ८० प्रकार के वातरोग उत्पन्न होते हैं। इनकी सामान्य चिकित्सा लवण के द्वारा लिखते हैं।

जम्भाई

(१) जम्भाई के रोग में निम्नलिखित औषध का प्रयोग करें। सैंधा लवण, सौंठ, मिर्च काली, पीपल बड़ा, अजवायन सब को समभाग अर्थात् एक एक तोला लेवें। बारीक पिसी कपड़छान करें, इसे चार रत्ती से एक माशे तक उष्ण जल के साथ सेवन करने से तुरन्त जम्भाई आनी बन्द हो जायेगी। औषध देकर बिस्तरे पर लुटाने से शीघ्र जम्भाई बन्द हो जाती है।

(२) तिलों के तैल में सैंधा लवण मिलाकर मालिश करने से भी लाभ होता है। इस रोग में मीठी चिकनी वस्तुओं के सेवन से लाभ होगा।

हनुग्रह (मुख बन्द होना)

(१) सैंधा लवण तिल के तैल वा महानारायण तैल में मिला मालिश करने से सेककर पसीना दिलाने से यह रोग दूर होगा।

(२) लहशुन साफ करके पीसलें इसमें कुछ सैंधा लवण मिला कर तिलों के तैल वा गोघृत में भूनकर रोगी को खिलायें, हनुग्रह दूर होगा, मुख खुल जायेगा।

(३) सैंधा लवण, रास्ना, पोहकरमूल, सुहांजना के बीज

बिल्व की छाल, चित्रक, गोखरु, पीपल बड़ा, सब ही एक एक तोला लेकर कपड़छान कर लेवें और गाय के घृत से थोड़ा २ भिगोलें ।

मात्रा—१।। माशे से २ माशे तक गर्म पानी के साथ प्रयोग करने से सर्व प्रकार के वायु के रोग दूर होते हैं ।

(४) सर्वप्रकार की वातव्याधियों के लिए मालिश के लिए महानारायण तैल, नारायण तैल, लशुन आदि तैल का प्रयोग करने से लाभ होता है । किसी वैद्य वा रसायनशाला से ये तैल ले लेवें । स्वयं बनाना कठिन है । लशुन आदि तैल सरल है उसका योग निम्नलिखित है ।

(५) सैंधा लवण १ छटांक, लशुन १ पाव, लाल मिर्च १ पाव अफीम ६ तोले, सब को कूट दो सेर तिलों के तैल में मिला कर लोहे के बर्तन में बन्द कर देवें । मुंह भी कपरोटी से बन्द कर देवें और वर्तन को चुल्हे के नीचे गाड़ दें । ५ दिन उसमें भोजन पकाते रहें । फिर तैलवाले बर्तन को निकालकर इसमें से तैल छान लेवें और बोतलों में सुरक्षित रखें । यह सर्वप्रकार के वातरोगों की अद्वितीय औषध है । इसकी मालिश से तुरन्त ही सर्वप्रकार की पीड़ा दूर होती है ।

(६) योगराज गूगल, दशमूलारिष्ट आदि का सेवन सब वातरोगों को दूर करता है ।

वात रक्त

वात रक्त में मिलकर रक्त को बिगाड़ता है । अधिक लवण, खारी वस्तुओं और सड़ी हुई वस्तुओं के खाने से, दही, मछली, अभक्ष्य भोजन से, बहुत खट्टी चटपटी वस्तुओं के सेवन

से, दिन में सोने से, वायु कुपित होकर वात रक्त रोग को उत्पन्न करता है। जिस से पैरों तथा शरीर के अन्य भागों में सूजन हो जाता है जिसमें पीड़ा और दाह जलन होती है।

चिकित्सा

(१) अरण्ड के बीज १ तोला, सेंधा लवण ३ माशे इन दोनों को गोमूत्र में पीसकर लेप करने से वातरक्त दूर होता है।

(२) सेंधा लवण, गन्धक आंवलासार, गाय का दूध, गाय का मूत्र और भैंस का मक्खन, सब को मिलाकर लेप बनायें। गन्धक १ तोला, मक्खन ३ तोले, गोमूत्र ५ तोले, दूध गाय ५ तोले, लवण ३ माशे, इस तोल से इन्हें मिलायें। इस से वातरक्त दूर होता है।

अमृतादि चूर्ण

सतगिलोय १० तोले, गूगल शुद्ध १० तोले दोनों को खूब बारीक पीसकर मात्रा ३ माशे प्रतिदिन शीतल जल के साथ लेने से सब प्रकार का वातरक्त दूर होता है।

इसी प्रकार अमृतादि घृत, अमृतादि गूगल, महातिक्त आदि घृत और किशोर गूगल का सेवन भी इस रोग में लाभदायक है।

श्वास वा दमा

(१) आक के पके हुए पीले पत्ते १ सेर, चूना १ तोला, लवण सेंधा १ तोला दोनों को जल के साथ पीसकर आक के पत्तों पर लेप करें और छाया में सुखालें और मिट्टी की हांडी में भर देवें और कपरोटी से दृढ़ता से बन्द कर देवें. चूल्हे

पर चढ़ाकर तेज आग छः घन्टे तक जलाते रहें ठंडा होनें पर औषध निकालकर बारीक पीसलें। इस में से १ रत्ती सायंकाल १ रत्ती प्रातःकाल पानी में रखकर खाने से श्वास दूर हो जाता है।

(२) सेंधा लवण १० तोले को आक के दूध में आठ दिन तक भिगोवें फिर मिट्टी के सकोरे में इसे डालकर और आक का दूध भरकर कपरोटी से बन्द कर देवें। इसे दस सेर जंगल के उपलों की आग में फेंक देवें। शीतल होने पर निकालकर अच्छी तरह पीस लेवें, सुरक्षित रखें। इसमे से १ माशा गर्म जल के साथ प्रयोग करने से श्वास रोग दूर होते हैं।

(३) काला नमक बारीक पीस लेवें। मात्रा २ माशे गर्म जल के साथ सोते समय प्रयोग करायें। अगले दिन ढाई माशे। इसी प्रकार आधा माशा प्रतिदिन बढ़ाते चले जायें। ६ माशे से आगे न बढ़ायें। एक मास तक ६ माशे लवण का प्रयोग करते रहें। यदि प्यास अधिक लगे तो उष्ण जल का सेवन करें। इसके एक मास प्रयोग करने से पुराने से पुराना दमा दूर होता है।

(४) श्वास-कल्पः—

यह योग वैद्य बलवन्तसिंह जी पहलवान का है। ये श्वास रोग के माने हुये चिकित्सक हैं।

सेंधा लवण छः माशे, भुनी हुई हींग छः माशे, कुठ ६ माशे, शुद्ध मैनशिल ६ माशे, काली मिर्चा ६ माशे और वायविडंग ६ माशे सबको कपड़छान कर लेवें और शीशी में रखें।

मात्रा—१ रत्ती से ४ रत्ती तक दिन में दो बार प्रातः सायं मधु के साथ देवें। दौरा पड़ने पर दो-दो घण्टे में सेवन करायें।

कफ प्रधान होने से केवल मधु से यदि कफ न निकलता हो तो मधु और घृत मिला के देवें। यह औषध श्वास, हिचकी, कास (खांसी) में तुरन्त लाभ करती है। यह योग पुराना, सरल और बहुत लाभ करनेवाला है। वैद्य जी का बार-बार का अनुभूत है। दमे के रोग में वमन और विरेचन करा देना चाहिए। फिर सभी औषध बहुत लाभ करेंगी।

(५) सैंधा लवण १ तोला, सुहागा भुना हुआ १ तोला, सोठ १ तोला, काली मिर्च १ तोला, पीपल बड़ा १ तोला सब को बारीक पीसकर कपड़छान कर लेवें। पान का रस डालकर तीन दिन तक खरल करें और एक एक रत्ती की गोली बनायें। तीन चार गोलियां दिन भर में उष्ण जल वा मधु के साथ लेने से सब प्रकार का श्वास और खांसी दूर हो जाती है।

हिचकी रोग

(१) सैंधा लवण १ माशा, मुलहटी चूर्ण ३ माशे, नीम्बू का रस ३ तोले और पीपल बड़ा चूर्ण १ माशा मिलाकर खाने से हिचकी रोग दूर होता है।

(२) सैंधा लवण, सांभर लवण और काला लवण तीनों समभार लेकर बारीक पीसें। मात्रा ६ माशे। गर्म जल के साथ लेने से हिचकी दूर हो जाती है।

(३) सैंधा लवण १ माशा, सज्जीक्षार १ माशा और निम्बू का रस २ तोले, शहद ६ माशे सब को मिलाकर चाटने से भयंकर हिचकी भी तुरन्त बन्द हो जाती है।

(४) काला नमक ३ माशे, निम्बु का रस दो तोले, मधु ६

माशे, सब को मिलाकर लेने से केवल दो ही बार से सर्वप्रकार का हिक्का रोग (हिचकी) दूर होता है ।

(५) मोर पंख की राख, सैंधा लवण, पीपल बड़ा चूर्ण ४ रत्ती, सैंधा लवण ४ रत्ती, १ माशा मधु के साथ मिलाके चाटने से सर्वप्रकार की हिचकी दूर होती है । अनुपम औषध है ।

(६) राई का चूर्ण ५ तोले एक सेर जल में पकाकर जब $\frac{1}{4}$ भाग रह जाए तो उतारकर निथार लेवें । रोगी को थोड़ा थोड़ा सैंधा लवण मिलाकर पिलाते रहें । इससे हिचकी दूर होगी ।

(७) गोघृत २ तोले, मधु ६ माशे, यवक्षार १ माशा, सैंधा लवण १ माशा सब को मिलाकर चाटने से हिचकी में लाभ होता है ।

(८) सैंधा लवण ३ माशे, पीपल बड़ा १ माशा, निम्बू का रस २ तोले इन को मिलाकर चटाने से हिचकी दूर होगी ।

कास (खांसी)

(१) सर्वप्रकार की खांसी तथा कफ के रोगों को लवण क्षारादि दूर कर करते हैं । कफ को पतला करके निकाल देते हैं ।

लवण सैंधा ६ माशे, १ तोला जल में खूब उबालकर १ तोला गाय के घी में जो गर्म किया हो बघार देकर कुछ ठण्डा होने पर दो तीन दिन तक पिलायें । इस क्रिया से कफ ढीला होकर निकलने लगेगा । स्नेहन क्रिया हो जाएगी । दो चार दिन इस प्रकार करके वमन कराकर (मैनफलादि से) फिर किसी औषध का सेवन करायें तो श्वास, दमा, काली खांसी, कुत्ता खांसी, सूखी खाँसी, पीनस आदि रोग जड़ से चले जाते हैं ।

कफकुठार रस

सैंधा लवण तीन माशे, यवक्षार ६ माशे, वासाक्षार ६ माशे, अपामार्ग क्षार ३ माशे, कण्टकारी क्षार ३ माशे, कनकक्षार ६ माशे नौशादर ३ माशे, केलाक्षार ६ माशे, शुद्ध सुहागा ६ माशे, कलमी शोरा ६ माशे, शंखभस्म ६ माशे, फिटकरी भस्म ६ माशे, सब को बारीक पीसकर शीशी में रखें। मात्रा १ रत्ती से ४ रत्ती तक मधु के साथ प्रयोग करें। शीतकाल में कफ प्रकृति के रोगी को और जब दौरा पड़ रहा हो तो अदरक का रस तीन माशे, मधु ६ माशे, मिलाकर श्वासकुठार रस देवें। इसका दिन में तीन बार तक प्रयोग कर सकते हैं।

यदि ग्रीष्मकाल हो और रोगी पित्त प्रकृति का हो तो श्वास कुठार रस १ रत्ती, गाय का मक्खन १ तोला, मिसरी कूजा ६ माशे मिलाकर प्रयोग करायें अथवा किसी अन्य ठण्डे शरबत वा अर्क के साथ देवें।

यदि रोगी वायु प्रकृति का हो तो श्वास कुठार रस रस १ रत्ती, बादाम रोगन ३ माशा के साथ मधु ६ माशे, मिलाकर देवें। दो तीन बार देवें।

अथवा रस १ रत्ती, मधु ६ माशे, घृत ३ माशे प्रतिदिन दो बार देने से वायु का श्वास दूर होगा। घी के स्थान पर बादाम रोगन भी ले सकते हैं। ऋतु, रोगी की प्रकृति, देश काल को देख कर श्वासकुठार रस का प्रयोग करने से रोगी को अवश्य लाभ होता है। यह रस श्वास, कास, (खांसी) प्रतिश्याय, (जुकाम) पीनस काली खांसी, कुत्ता खांसी और सूखी खांसी सभी रोगों की अद्वितीय औषध है। हमारे वैद्य बलवन्तसिंह जी इसका

खूब प्रयोग करते हैं। उनका तथा सभी अच्छे वैद्यों का यह अनुभूत योग है। इसी में कुछ परिवर्तन, परिवर्धन करके कितने ही वैद्य डाक्टर अपने पैटेंट नाम रखकर इससे खूब धन कमाते हैं।

उन्माद वा पागलपन

(१) सेंधा लवण ३ माशे, त्रिकुटा ३ माशे, हींग ३ माशे, वच ३ माशे, कुटकी ३ माशे, शिरीष के बीज ३ माशे, करंजवे के बीज की गिरी ३ माशे, सिरसों श्वेत ३ माशे, सब को पीस कर बत्तियां बनायें और बत्ती को पानी में घिसकर पागल की आंखों में लगायें। इससे पागलपन दूर होता है। मूर्च्छा, बेहोशी, हिस्टेरिया के दौरे को भी दूर करने के लिए इसका प्रयोग होता है।

(२) सेंधा लवण, सौंठ, अजमोद, हल्दी, दारु हल्दी, वच, मुलहटी, पीपल बड़ा, जीरा काला, सब समतोल लेकर कपड़छान करके चूर्ण बनालें।

मात्रा—३ माशे से ६ माशे तक। मधु ३ माशे, १ तोला गोघृत में मिलाकर चाटने से कुछ ही दिन में पागलपन दूर होता है।

कर्ण रोग

(१) बकरी के दूध में थोड़ासा सेंधा लवण मिलाकर गर्म करके कानों में डालने से कानों की भयंकर पीड़ा भी दूर हो जाती है।

(२) सेंधा लवण १ रत्ती, तिलों का तैल ३ माशे, अदरक का रस ६ माशे, शहद ६ माशे, सब को मिलाकर कानों में भरने

से कर्णनाद और बहरापन दूर हो जाता है।

(३) सैंधा लवण, हींग, सौंठ, तोनों वस्तुओं को जल के साथ पीसकर टिकिया बनाकर तिलों के चौगुणे तैल में डालें और तैल से चौगुणा जल डालकर पकायें, जब केवल तैल रह जाए तो छान कर सुरक्षित रखें। इसे कानों में डालने से कर्णपीड़ा दूर होती है।

(४) काला लवण, मुलहटी, अदरक इन तीनों को समतोल ले लेवें। इनको रगड़कर गोलासा बना लेवें। इसमें चार गुणा सिरसों का तैल डाल लेवें और आग जलायें तथा पकायें, जब केवल तैल रह जायें छानकर रखलें। इसे कानों में डालने से कानों की पीड़ा दूर होती है।

नासिका रोग

(१) शीतकाल में रहनेवाले परिश्याय (जुकाम नजले) के रोग में गर्म पानी में सैंधा लवण डालकर जलनेती करने से बहुत लाभ होता है।

(२) सैंधा लवण, मिर्च काली, पीपल बड़ा, सौंठ, वच, सौहांजना, तुलसी के पत्ते, कण्टकारी की जड़, जमालगोटे की जड़, सब एक एक तोला, इन सब को कपड़छान करलें और पान के रस में खरल करके गोला बनालें, इसमें आध सेर तिलों का तैल डालें और दो सेर जल डालकर कढाई में पकायें, जब केवल तैल रह जाये तो इसे छानकर शीशियों में रखें, इस तैल की नस्य वा नसवार लेने से पूतिनस्य रोग जिससे मुख और नाक से दुर्गन्ध आती है वह सर्वथा नष्ट हो जाता है।

मुख के रोग

मुख के रोगों का अर्थ मुख, जिह्वा, तालु दांत, गले और होठों के रोगों से है।

ये सभी रोग वात पित्त और कफ के दूषित होने से होते हैं। सैंधा लवण मुख के रोगों को दूर करता है। यह सभी विद्वान् जानते हैं जैसे मुख में तालु, कण्ठ होठ और दांतों में कहीं भी कष्ट हो, १ सेर उष्ण जल में दो तोले सैंधा लवण डालकर भोजन के पश्चात् वा जब आवश्यकता हो खूब कुल्ले करें यदि सायंकाल सोते समय ऐसा करें अधिक लाभ होगा। मुख में किसी स्थान पर पीड़ा हो तो अवश्यमेव लाभ होगा।

(१) सैंधा लवण, तैल, घी, राल, मोम, गुड़, गेरु और रास्ना इन सब को यथायोग्य कूट पीसकर मिलालें और आग पर रखकर पकायें। जब मरहम सी बन जाये तो उतारकर सुरक्षित रखें। इस औषध को होठों पर लागने से होठों का फटना, होठों के जख्म दूर होते हैं।

(२) सौ बार धोया हुआ मक्खन १ छटांक, माशे कपूर और १ माशा सैंधा लवण मिलाकर लगाने से होठों के जख़्म, पीड़ा, फटना सब रोग दूर होते हैं।

(३) पीपल बड़ा, सैंधा लवण दोनों एक एक माशा लेवें, शहद ३ माशे, घी ६ माशे मिलाकर मुख में लगाने तथा रखने से दांतों की पीड़ा और दांतों का हिलना शीघ्र बन्द हो जाता है।

(४) सांभर लवण १ तोला, भिलावा शुद्ध १ तोला दोनों को मिट्टी के एक सकोरे में डालकर इसको अच्छी प्रकार से कपरोटी करवालें और पांच सेर पक्के उपलों की आग में फूंक देवें। ठण्डा होने पर निकालकर खूब बारीक पीस लेवें. इसका

प्रयोग प्रतिदिन मंजन के रूप में करें।

इससे मसूढों और दांतों के सब रोग दूर होते हैं।

वज्रदन्त मञ्जन

त्रिकुटा और त्रिफला पांचों नोन पतंग ।
दांत वज्रसम होते हैं माजूफल के संग ।।

इस लोकोक्ति के अनुसार छिलका हरड़, छिलका बहेड़ा, आंवला, सौंठ, काली मिर्च, पीपल बड़ा, पतंग (लकड़ी), नीलाथोथा भुना हुवा और माजूफल सब एक एक तोला लेवें और कूटकर बारीक मंजन बनालें। इस मंजन को प्रतिदिन करने से दांतों के सब रोग दूर होते हैं। दांत बड़ी आयु तक ठीक रहते हैं।

क्षुद्र रोग

(१) जिह्वा के रोग

(१) सेंधा लवण, भारंगी, पाढल, त्रिकुटा कुटकी, पटोलपत्र, सब को समभाग लेकर कपड़छान कर लेवें और मधु में मिलाकर जिह्वा (जबान) पर लगाने से जिह्वा सम्बन्धी सब रोग दूर हो जाते हैं।

(२) सेंधा लवण, सरसों सफेद दोनों को बारीक पीसकर कुछ समय तक मुख में रखने से जिह्वा (जबान) के सब छाले तथा अन्य रोग सब दूर होते हैं।

(३) त्रिफला का क्वाथ करके इसमें कत्था और सेंधा लवण मिलाकर कुल्ले करने से मुख का आना आदि पित्त के विकार दूर होते हैं।

(४) सेंधा लवण, कुट, काली मिर्च, पीपल बड़ा, पाढल

नागरमोथा, सब समतोल लेकर बारीक चूर्ण बनालें और शहद में मिलाकर तालु पर लगायें। इससे तालु के रोग दूर होते हैं।

वात, कफ और रक्त के दूषित होने से प्रायः युवकों के चेहरों पर फुन्सियां निकल आती हैं। उनको आयुर्वेद में मुखदूषिका कहते हैं। ये बहुत बढ़कर मुख की सारी कान्ति (सुन्दरता) को नष्ट कर डालती हैं। इसमें रोगी को पहले विरेचन (जुलाब) देना चाहिए फिर औषध का सेवन लेपादि करायें।

(२) सेंधा लवण, अमलतास का छिलका, अनार का छिलका, लोध, अम्बा हल्दी, नागरमोथा, सब समतोल लेकर सबको बारीक कपड़छान करके जल में पीसकर चेहरे पर लेप करें। सूख जाने पर जल से धो डालें। इसके कुछ दिन प्रयोग करने से सब कील वा फुन्सियां दूर हो जाती हैं।

(३) अमृतारिष्ट के सेवन करने से भी ये फुन्सियाँ नष्ट होती हैं।

(४) सत्त्वगिलोय २ माशे प्रातः सायं मधु में सेवन करने से भी इस रोग में लाभ होता है।

(३) लहसन, मस्से और तिल

यदि इनको सदा के लिए दूर करना हो तो इन्हें तेज उस्तरे चाकू से काट कर लवणक्षार, तेजाब वा आग से जला देना चाहिए।

(१) सेंधा लवण और मोर की बींठ मस्सों पर लगाने से ये दूर हो जाते हैं। इन्हें जल की अपेक्षा सिरके, दही, अदरक वा निम्बू के रस में रगड़ कर लगायें। मस्से दूर होंगे।

(२) मस्सों को उपलों से रगड़कर इस पर चूना, सज्जी वा

लवण का जल बार बार तीन चार दिन तक लगायें । मस्से दूर होंगे ।

(३) अपामार्ग क्षार को अदरक के रस के साथ मस्सों पर लगायें। उनको क्षार और अदरक की फांकों से घिसकर निकाल डालें। मस्से समूल नष्ट हो जाएंगे। अनेक बार का अनुभूत है।

(४) खुरफे (कुल्फे) के शाक में भी क्षार होता है। खुरफे के पत्तों को जल वा दूध में पीसकर मस्सों व तिलों पर लगाने से तिल, लहसुन, और मस्से भी दूर होते हैं ।

(४) गञ्ज

(१) दही १ पाव, सैंधा लवण ६ माशे, मिलाकर ताम्बे के बर्तन में घोटें जिससे दही का रंग हरा हो जाए। इसका लेप गंज पर करने से गंज समाप्त हो जाता है।

(२) कुटकी १ तोला, सैंधा लवण ३ माशे, कड़वे परवल वा भांगरे के रस में घोटकर कुछ दिन लगाने से गंज दूर होगा ।

(३) भृंगराज का रस २ तोले, सैंधा नमक तीन माशे, आंवला ६ माशे इन को पीसकर लेप करें। कुछ दिन में ही गंज समाप्त होगा। बाल उग आयेंगे।

(४) हाथी दांत की राख ६ माशे, रसौंत ६ माशे, सैंधा लवण, ३ माशे, बकरी का दूध तथा घी मिलाकर इनका लेप करें। भृंगराज का तैल गंज को दूर करने के लिए सर्वोत्तम है।

बाल रोग

बच्चों की खांसी

(१) शीशा नमक को आग में गर्म करके जल में बुझायें, इसमें

से जल की कुछ बून्दें दिन में दो तीन बार बच्चों को पिलायें। इससे बालकों की बढ़ी हुई खांसी दूर होगी।

(२) काकड़ा सिंगी, अतीस मीठा, पीपल बड़ा, नागर मोथा, यवक्षार, वासाक्षार सब एक एक माशा लेकर

मात्रा—१ रत्ती दो तीन बार मधु में मिलाकर देवें। सर्व-प्रकार की खांसी दूर होगी।

(३) यवक्षार, नौशादर दोनों को मिलकर २ रत्ती से ४ रत्ती तक खिलाने से बालक का पेशाब खुलकर आवेगा।

पेट के रोग

(१) सैंधा लवण, सौठ, हींग, देशी अजवायन, इन सब को समभाग लेकर बारीक कपड़छान करके तिलों के तैल में मिलायें, और पेटपर चुपड़कर ऊपर से (एरंड) अरण्ड के पत्त गर्म बान्ध देवें। उदर पीड़ा अफारा आदि दूर होंगे।

(२) सैंधा लवण, सौंठ, हींग भुनी हुई, अजवायन देसी, भारंगी इनका चूर्ण बनाकर इसमें थोड़ासा घी मिला लें, बालक को उष्ण जल के साथ खिलाने से उदरपीड़ा अफारा दूर होगा। सारी वस्तुएं समभाग लेवें।

वमन

(१) सैंधा लवण, धान की खील, आम की गुठली की गिरी तीनों को समभाग लेकर इनका बारीक चूर्ण बनायें और इसमें शहद मिलाकर बच्चों को चटायें। यह भी वमन को रोकने के लिए अच्छी औषध है।

(२) कुटकी का चूर्ण दो रत्ती मधु के साथ देने से बच्चों की वमन दूर होती है।

हिचकी

पीपल बड़ा ३ माशे, मुलहटी ३ माशे, सैंधा नमक २ माशे, सब को बारीक पीसलें और २ रत्ती से ४ रत्ती तक शहद में मिला कर कई बार चटायें। बच्चों की हिचकी दूर होगी।

बालकों के दस्त

काकड़ा सींगी, पीपल, वायविडंग, अजमोद, सैंधा लवण, सब तीन तीन माशे लेकर कपड़ छान कर लेवें। बच्चों को ४ रत्ती शहद, गाय की छाछ वा चावल के माण्ड के साथ देने से दस्त बन्द होंगे।

बच्चों का ज्वर

नागर मोथा, काकड़ा सींगी, पीपल बड़ा, अतीस मीठा, सैंधा लवण, सब तीन तीन माशे लेकर क्वाथ बनायें और थोड़ा थोड़ा बच्चे को पिलायें। खांसी, ज्वर और दस्तों का आना, बच्चों के अन्य सभी रोग दूर होंगे।

नेत्र रोग

(१) सैंधा लवण १ माशा, सौंठ २ माशे, नीम के पत्ते ३ तोले सबको पीसकर टिकियां बनायें और आंखों पर रखकर पट्टी बांध दें। इससे वायु और कफ के कारण दुखती आंखें ठीक हो जायेंगी।

(२) सैंधा नमक, हल्दी, मुलहटी, पीलीमिट्टी और रसौंत इन सबको समतोल में लेकर जल के साथ पीस लेवें और गाढ़ा लेप करके आंखों पर लगायें इससे आंखों की खुजली दूर होगी।

(३) सैंधा लवण, लोध पठानी दोनों को समभाग लेकर तवे

रखकर जलालें और इसमें मधु और घी मिलाकर लेप बनालें और आंखों पर लगायें तो दुखती आंखों को लाभ होता है।

(४) सेंधा लवण १ तोला, सोंठ १ तोला, फिटकड़ी सफेद भुनी हुई १ तोला, इन सबको खूब बारीक पीसकर कई बार कपड़ छान करके सुरमे के रूप में आंखों में डालने से आंखों का जाला और फोला नष्ट हो जाता हे।

(५) सेंधा लवण ३ माशे, सांभर लवण ३ माशे, शीशा लवण ३ माशे, कपूर ३ माशे, इलायची छोटी के दाने ३ माशे, पीपल बड़ा ३ माशे, काली मिर्च ३ माशे, काला सुर्मा १५ तोला, समुद्र झाग ६ माशे, फिटकड़ी भुनी हुई ६ माशे, कलमी शोरा ६ माशे, जस्त की भस्म ६ माशे इन सबको खूब बारीक पीस लेवें और त्रिफले के क्वाथ के जल के साथ तीन दिन तक खरल करें फिर पीछे नीम की कोंपलों के रस के साथ एक दिन खरल करें। और सूख जाने पर कपड़छान करके सुर्मे के रूप में प्रयोग करें। इसके प्रयोग से आंखों के सभी रोग दूर होते हैं और नेत्रज्योति बढ़ती है।

(६) सेंधा लवण १ छटांक पक्के खरल में डालें और इसे नीबू के रस में सात दिन तक खरल करें। सूख जाने पर सुर्मे के रूप में प्रयोग करें। आंखों का फोला, खुजली आदि रोग दूर होते हैं।

(७) सेंधा लवण १ तोला, हल्दी एक तोला, अम्बा हल्दी १ तोला, दारुचीनी १ माशा, नीम के पत्ते २ माशे, इन सब को बारीक पीसकर प्रतिदिन बछड़े के मूत्र में छः घण्टे खरल करें और यदि ६ मास तक खरल करलें और इसकी गोली बनाकर रख लें और अर्क गुलाब के साथ घिसकर लगाने से फोला जड़ से उखड़ जाता है।

(८) बारहसींगे के सींग को बारीक करके अथवा वैसे ही जल के साथ घिसें और इसमें सैंधा लवण १ तोला डालकर नींबू के रस में तीन चार दिन तक खरल करके गोलियां बनालें और जल में घिसकर लगाने से आंखों का जाला निश्चय से नष्ट हो जाता है ।

(९) मनुष्य के सिर के बाल जलाकर राख बनालें । उसे बारीक पीस लें । $\frac{1}{3}$ भाग सैंधा नमक मिलाकर बारीक पीस कर सुरमा बनालें और आंखों में डालें । इससे आंखों और पलकों की खुजली दूर हो जाती है ।

(१०) नीम के पत्ते १ पाव, सैंधा लवण १ तोला, दोनों को मिट्टी के सकोरे में बन्द करके कपरोटी करके फूंक देवें । ठण्डा होने पर निकालकर इसे नींबू के रस में खरल करें तथा सुरमा बनाकर आंखों में लगायें इससे आंखों की और पलकों की खुजली तथा अन्य नेत्र रोग भी दूर होते हैं ।

(११) आंखों में यदि फोला वा नाखून नया हो तो सैंधे लवण को जल में मिलाकर छींटे मारने वा आंखें दिन में कई बार धोने से फोला नष्ट हो जाता है ।

सावधान

इस लवण की पुस्तक में लवण के औषध के रूप में बहुत से लाभ वा उपयोग बतायें हैं । लवण क्षार में जो दोष हैं वह भी लिख देता हूं जिससे पाठक सावधान रहें तथा अन्धाधुन्ध लवण का प्रयोग न करें । लोग तो स्वाद के कारण ही नमक का अधिक प्रयोग करते हैं उन्हें हानि लाभ की कोई चिन्ता नहीं,

यथार्थ में चरक आदि शास्त्रों में लवण रस के ही लाभ बताये हैं वह सांभर आदि लवण के नहीं। लवण से वे सदैव सैन्धे नमक का ही ग्रहण करते हैं जो भारत में बहुत थोड़ी मात्रा में मिलता है क्योंकि इसकी अधिकतर खान बटवारे के पीछे पाकिस्तान में रह गई। यह हमारा दुर्भाग्य है। लवण रस शरीर के लिए अत्यन्त उपयोगी है। इसी कारण भगवान् ने लवण रस सब से अधिक पदार्थों में उत्पन्न किया है। प्रायः सभी खाद्य पदार्थों में लवण रस पाया जाता है। फल तथा शाक सब्जियों में स्वाभाविक रूप से लवण रस या प्राकृतिक नमक अधिक पाया जाता है। अतः कन्द मूल फल शाक भाजी के खाने को स्वास्थ्य रक्षार्थ अधिक महत्व दिया है। जो लोग शाक भाजी नहीं खाते वे प्रायः रोगी देखे जाते हैं। इसी स्वाभाविक लवण रस की प्रशंसा प्राचीन शास्त्र तथा आधुनिक वैद्य और डाक्टर करते हैं जो भोजन में डालकर ऊपर से बाह्य वा बनावटी सांभर समुद्र आदि का नमक खाते हैं वह हानिकारक होता है उस की आवश्यकता भी नहीं। वास्तव में हमारी आवश्यकता के अनुसार लवण रस हमें भोज्य पदार्थों से स्वतः ही प्राप्त हो जाता है। अतः यह आवश्यक नहीं कि भोजन पकाते समय उसमें लवण डाला जाए या खाते समय ऊपर से डाला जाए। लवण रस की प्रशंसा के कारण लोगों में नमक मिलाने तथा खाने की प्रथा वेग से बाढ के समान चल रही है यह अनावश्यक और हानिकारक है। चटोरे और स्वादु लोग इस लवण के अधिक सेवन करने से बहुत अधिक हानि उठाते हैं। अतः ऊपर से नमक डालकर अथवा भोजन में पकते समय नमक डालकर खाने की प्रथा को बन्द करना ही हितकर है।

भोज्य पदार्थों में विद्यमान स्वाभाविक लवण रस ही हमारे स्वास्थ्य के लिए पर्याप्त है। यह बात भी भली भांति समझ

लेनी चाहिए कि जहां कहीं लवण के लाभ वा उपयोग लिखें हैं वहां पर सांभर विड सोंचर और समुद्र नमक तो कदापि लेना नहीं चाहिए। वहां सैंधा नमक का ही प्रयोग करें। क्योंकि "लवणं सैन्धवं प्रोक्तम्" जहां कहीं लवण लिखा हो तो सैंधा नमक ही लेना चाहिये। चरकशास्त्र में "सैंधवं लवणानां श्रेष्ठतमं पथ्यम्" लवणों में सब से श्रेष्ठ सैंधा नमक पथ्य माना है जो औषध के लिए भी नहीं मिलता और सांभर नमक का सेवन अत्यन्त हानिकारक है। ब्रह्मचर्य की रक्षार्थ सभी नमक छोड़ देने चाहियें।

लवण से हानियाँ

चरक शास्त्र में लवण के दोष इस प्रकार लिखें हैं—

लवणो रसो गुरुः स्निग्ध उष्णश्च पित्तं कोपयति, रक्तं तर्पयति, मोहयति, मूर्च्छयति, तापयति, दारयति, कुष्णाति मांसानि, प्रगालयति कुष्ठानि, विषं वर्धयति, शोफान् स्फोटयति, पुंस्त्वमुपहन्ति, इन्द्रियाण्युपरुणद्धि, वलीपलितखालित्यमापादयति, अपि च लोहितपित्ताम्लपित्तविसर्पवातरक्तविचर्चिकेन्द्रलुप्तप्रभृतीन् विकारानुपजनयति"।

अर्थात् लवण रस भारी स्निग्ध और उष्ण होता है लवण का उपयोग पित्त को कुपित करता है, प्यास लगाता, मोह को पैदा करता है। मूर्च्छा तथा सन्ताप को उत्पन्न करता है, फाड़ता है मांस को कुरेद देता है, कुष्ठ को गलाकर गिरा देता है। विष को बढा देता है। शोथों को फोड़ देता है, पुंस्त्व को नष्ट करता है, इन्द्रियों को क्षीण करता है, मनुष्य को बुड्ढा कर देता है, शरीर पर झुरियां पड़ जाती हैं, बालों को सफेद तथा गंजा कर देता है। रक्तपित्त, अम्लपित्त, विसर्प, वात-

रक्त, विशूचिका, इन्द्रलुप्त आदि रोगों को उत्पन्न करता है।

सुश्रुत शास्त्र में लवण को खुजली शोथादि रोगों को उत्पन्न करनेवाला माना है तथा पुस्त्व और इन्द्रियों की शक्ति का नाशक माना है।

अतः चटोरे व्यक्ति स्वाद के कारण नमक का सेवन करके ब्रह्मचर्य नाश करके अपना सर्वनाश करते हैं। अतः भोजन में नमक का सेवन हानिकारक ही है। हमें शाक भाजी फल आदि का सेवन अपनी प्रकृति के अनुसार यथोचित मात्रा में प्रतिदिन करना चाहिए जिससे शरीर की आवश्यकतानुसार लवण रस की पूर्ति हो सके और बाहर का नमक खाकर ब्रह्मचर्य तथा स्वास्थ्य का नाश नहीं करना चाहिए। इस विषय में कोई अधिक जानना चाहे तो मेरी लिखी 'भोजन' * पुस्तक पढ़ने की कृपा करे।

———



* ब्रह्मचर्य के साधन ११ भाग पृथक् छपकर तैयार हैं जिन में क्रमशः १ प्रातः जागरण, २ चक्षुः स्नान उषःपान शौच, ३ दन्त-रक्षा, ४ व्यायाम, ५ स्नान सन्ध्या यज्ञ, ६ प्राणायाम, ७ सत्संग, ८ स्वाध्याय, ९ भोजन, १० निद्रा और ११ मेखला पर विचार किया गया है। मूल्य पृथक् पृथक् लेने पर ५ रुपये। एक जिल्द में ४ रुपये।

घरेलु औषध ग्रन्थमाला का तृतीय पुष्प

घरेलु औषध--३

मिर्च

घरेलु औषध ग्रन्थमाला का द्वितीय पुष्प लवण आपके हाथ में है। आपने इसे पढ़ा ही होगा। जिस प्रकार हल्दी लवण का उपयोग प्रत्येक गृहस्थ के घर में होता है उसी प्रकार मिर्च के बिना भी कोई गृहस्थी ही कार्य चलाता होगा। हरी, लाल, काली और सफेद मिर्चों का उपयोग प्रत्येक व्यक्ति शाक में भाजी में, दाल में, अचार में, छाछ में दही में और नहीं तो रोग में ही औषध के रूप में प्रयोग कर लेता है और चटोरे व्यक्ति त मिर्चों से अपना मुंह जब तक दिन में कई बार नहीं जला लेते तब तक उनको शान्ति नहीं मिलती। संसार के सभी देशों में हल्दी लवण की तरह मिर्चों का उपयोग भी होता है किन्तु रोगों को दूर करने के लिए मिर्चों का उपयोग किसी किसी को आता है। लोगों का हित दृष्टि में रखते हुए "घरेलु औषध ग्रन्थमाला" का तृतीय पुष्प मिर्च के नाम से शीघ्र ही भेंट किया जायेगा।

(लेखक)

स्वामी ओमानन्द जी की रचनायें



१.	बलिदान (सचित्र)	१२.००
२.	शेरशाह सूरी	.७५
३.	वीर हेमू	.७५
४.	मांस मनुष्य का भोजन नहीं	१.००
५.	ब्रह्मचर्यामृत	.२०
६.	बाल विवाह से हानियां	.१०
७.	स्वप्नदोष चिकित्सा	.२०
८.	बिच्छू विष चिकित्सा	.१०
९.	पापों की जड़ (शराब)	.३०
१०.	हमारा शत्रु (तम्बाकू)	.३०
११.	नेत्र रक्षा	.२५
१२.	व्यायाम का महत्त्व	.२५
१३.	राम राज्य कैसे हो	.२०
१४.	हरयाणा के वीर यौधेय	७.००
१५.	ब्रह्मचर्य के साधन १—२ भाग	.३०
१६.	,, ,, ३ भाग (दन्त रक्षा)	.२०
१७.	ब्रह्मचर्य के साधन ४ भाग (व्यायाम सन्देश)	१.००
१८	,, ५ ,, (स्नान, संध्या, यज्ञ)	.४०
१९.	,, ६ ,, (प्राणायाम)	१.००
२०	,, ७, ८ ,, (सत्संग, स्वाध्याय)	.५०
२१.	,, ९ ,, (भोजन)	.७०
२२.	ब्रह्मचर्य के साधन १० भाग (निद्रा)	.५०
२३.	ब्रह्मचारी की मेखला (११ भाग)	.६०
२४.	रूस में १५ दिन	.५०
२५	हरयाणा का संक्षिप्त इतिहास	.५०
२६.	वीरभूमि हरयाणा	४.००
२७.	मेरी विदेश यात्रा	.७५
२८.	जापान यात्रा	.७५
२९.	शराब से सर्वनाश	.५०

प्रकाशक— हरयाणा साहित्य संस्थान गुरुकुल झज्जर। दूरभाष ४४

हमारे प्रमुख प्रकाशन

१.	प्रदीप-उद्द्योत-विमर्श सहितं व्याकरणमहाभाष्यम्	८०.००
२.	छन्दःशास्त्रम्	२.००
३.	काव्यालंकारसूत्राणि	१.२५
४.	कारिकाप्रकाश	१.२५
५.	दयानन्दलहरी	१.२५
६.	ब्रह्मचर्यामृतम्	.५०
७.	विरजानन्द चरितम्	१-००
८.	नारायणस्वामिचरितम्	.७५
९.	ब्रह्मचर्यशतकम्	.६५
१०.	गुरुकुलशतकम्	.५०
११.	ब्रह्मचर्यमहत्त्वम्	५०
१२.	चारुचरितामृतम्	१.००
१३.	भारतेतिहासः	१.००
१४.	तत्त्वबोध	१.००
१५.	लिङ्गानुशासनवृत्तिः	१.२५
१६.	स्थावर जीव मीमांसा	२.००
१७.	विरजानन्दचरित (हिन्दी)	१.५०
१८.	वैदिक धर्म परिचय	.६५
१९.	छात्रोपयोगी विचारमाला	.६५
२०.	महर्षि दयानन्द जीवन कथा (भजन)	.७५
२१.	असली अमृतगीता १ भाग	.४०
२२.	असली अमृतगीता २ भाग	.३०
२३.	बस्तीराम रहस्य	.३०
२४.	मानस दीपिका	१.००
२५.	पोप की नाखर	.५०
२६.	पाखण्ड खंडनी	१.५०
२७.	बस्तीराम अग्निबाण	१.००
२८.	वैदिक भारत में यज्ञ	२.००
२९.	दो महात्मा (ईसा, दयानन्द)	१.००
३०.	माया का खेल	२.५०
३१.	सामयिक समाधान	.५०
३२.	बाल शिक्षा	.२०
३३.	मनोविज्ञान शिव संकल्प	३.५०
३४.	वेद प्रवेश (१-२ खण्ड)	२.५०
३५.	आर्य सामाजिक धर्म	.७५
३६.	फिट् सूत्र प्रदीप	१.००
३७.	महर्षि दयानन्द जीवन	२.२५
३८.	वेद विमर्श (प्रथम भाग)	२.००
३९.	आसनों के व्यायाम	१.००
४०.	सुखी जीवन	२.००
४१.	घर का वैद्य (दोनों भाग)	२ ००
४२.	रामप्रसाद बिस्मिल	.७५
४३.	ईशोपनिषद् व्याख्या	.७५
४४.	संस्कृत प्रबोध	१.५०
४५.	एक सत्पुरुष की दिनचर्या	१.२५
४६.	गीत कुसुमाञ्जलि	.७५
४७.	जीव का परिमाण	७५
४८.	कन्या और ब्रह्मचर्य	.७५

प्रकाशक—हरयाणा साहित्य संस्थान, पो० गुरुकुल झज्जर, रोहतक

हमारे नये प्रक

१.	भारतेतिहासः (प्रथम खण्डः	
२.	फिट्सूत्रप्रदीपः	
३.	लिङ्गानुशासन-वृत्तिः	
४.	घर का वैद्य (प्रथम द्वितीय	
५.	सुखी जीवन	
६.	रसालंकारछन्दोदीपिका	१.५०
७.	रूस में पन्द्रह दिन	.५०
८.	जापान यात्रा	.७५
९.	मेरी विदेश यात्रा	१.००
१०.	शराब से सर्वनाश	.५०
११.	मांस मनुष्य का भोजन नहीं	१.००
१२.	हरयाणा के वीर यौधेय (प्रथम भाग)	७.००
१३.	चारुचरितामृतम्	१.००
१४.	ब्रह्मचर्यामृतम् (संस्कृत)	.५०
१५.	दयानन्द लहरी	१.२५
१६.	ईशोपनिषद् व्याख्या	.७[illegible]
१७.	योगार्यभाष्य	५.००
१८.	आसनों के व्यायाम	१.००

हरयाणा साहित्य संस्थान गुरुकुल झज्जर, रोहतक